Kalindi College

UNIVERSITY OF DELHI

ACCREDITED WITH GRADE 'A+' BY NAAC

प्रवाह Pravah 2024-25

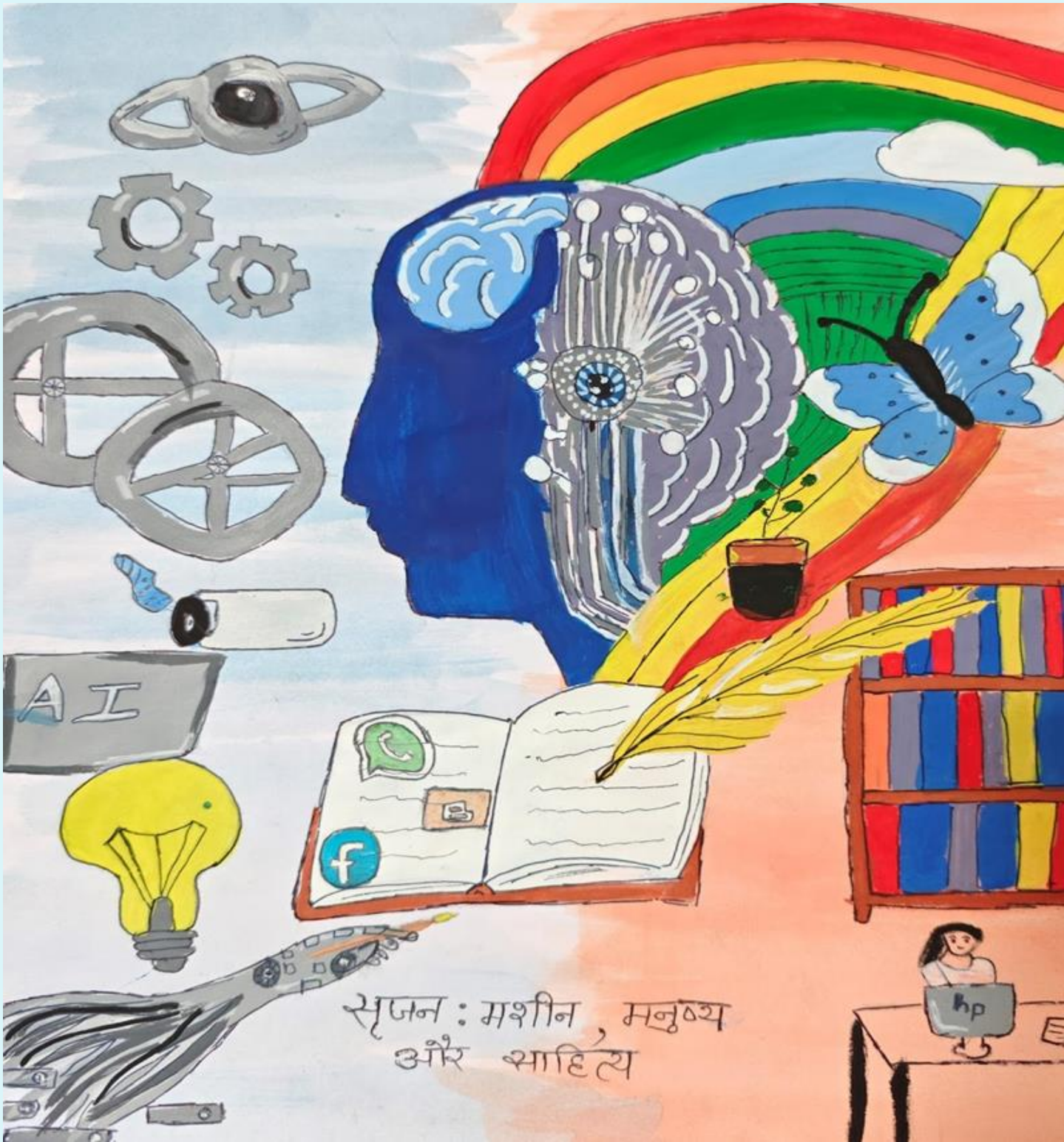

प्राचार्या जी की कलम से

प्रिय छात्राओं

आज की दुनिया में सृजन अब मानवीय कल्पना तक सीमित नहीं रह गया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से संचालित मशीनें अब कविताएँ, कहानियाँ और निबंध लिख रही हैं, तकनीक और रचनात्मकता के बीच की रेखाएँ धुंधली पड़ रही है, फिर भी, सच्चा साहित्य मानवीय भावनाओं में निहित है । प्रवाह 2024-25 का विषय है- "सृजन: मशीन, मानवता और साहित्य"। हम जानते हैं कि AI मशीनें यानी क्रत्रिम बुद्धिमता साहित्य के रूप और शैली की नकल कर हैं लेकिन यह मानवीय संवेदनाएँ ही हैं जो साहित्य को उसकी आत्मा देती है। मनुष्य और मशीन के बीच यह सहयोग रोमांचक संभावनाएँ प्रदान कर सकता है, अभिव्यक्ति की सीमाओं का विस्तार भी कर सकता है। लेकिन सृजन का मूल मानवीय भावना और जीवन को समझने और व्यक्त करने की उसकी अंतहीन खोज में निहित है, भले ही तकनीक कितनी ही विकसित हो जाये । हम हमेशा अपने आदर्श वाक्य "ज्ञानं शीलं धर्मश्चैव भूषण" को याद रखें।

मैं प्रवाह की संयोजक डॉ. रक्षा गीता, सह-संयोजक सुश्री मोनिका जुत्शी और सदस्य डॉ. संजयकुमार सिंह, डॉ.शिप्रा गुप्ता, डॉ. सुश्रुत भाटिया, डॉ. दिव्या मिश्रा, डॉ अवनीश कुमार, डॉ. तरुणा सौरभ, डॉ उपासना इस्सर, डॉ नीति पाण्डेय, सुश्री पल्लवी, के योगदान को सराहना करती हूँ । हमारी छात्रा सम्पादन मंडल- मानसी गुप्ता, मुस्कान कुमारी, वंशिका कल्हरिया,निधि शर्मा, मनीषा,संध्या निषाद, अनुष्का खंण्डूरी, निधि, संध्या, मनीषा कुमारी, संजना,शगुन सिंह, अंजलि राजवंशी, सभ्यता, काव्य चौहान, दीक्षा गुप्ता, दिव्यांशा बत्रा व वंदना को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ ।

प्रो. मीना चरंदा
प्राचार्या

संपादकीय

सृजन: मशीन, मानवता और साहित्य

प्रिय छात्राओं,
सप्रेम नमस्कार
आपके हाथों में यह विशेषांक एक ऐसे कालखंड की गवाही है, जहाँ तकनीकी प्रगति और मानवीय संवेदनाएं साथ-साथ चल रही हैं। इस बार की हमारी कॉलेज पत्रिका ने एक ऐसे विषय को केंद्र में रखा है, जो न केवल वर्तमान समय की माँग है, बल्कि भविष्य की दिशा भी तय कर सकता है- सृजन: मशीन, मानवता और साहित्य"।

यह संयोग मात्र नहीं है कि जब एक ओर मशीनें सोचने लगी हैं, वहीं दूसरी ओर मनुष्य अपनी भावनाओं, कल्पनाओं और मूल्यों की गहराइयों को और अधिक गंभीरता से समझने लगा है। इस पत्रिका में हमारे विद्यार्थियों ने इसी द्वंद्व संवाद और समन्वय को रचनात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। चित्रों से लेकर कहानियों तक, कविताओं से लेकर लघु फिल्म समीक्षाओं तक, हर एक सृजन ने यह सिद्ध किया है कि आज की पीढ़ी केवल तकनीकी दक्षता में ही नहीं, बल्कि भावनात्मक और नैतिक बोध में भी आगे है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आज केवल सूचना का साधन नहीं रह गई है। वह कविता भी लिख सकती है, चित्र भी बना सकती है, और संगीत भी रच सकती है। परंतु इन सबके बीच एक मूल अंतर है — "संवेदना" और मानवीयता । इसी मानवीय संवेदना को हमारे विद्यार्थियों ने अपने लेखों, विचारों और सृजन के माध्यम से उजागर किया है। उन्होंने न केवल AI के तकनीकी पक्षों पर प्रकाश डाला है, बल्कि यह भी दर्शाया है कि कैसे इसका संतुलित और नैतिक उपयोग मानवता को आगे ले जा सकता है।

इस अंक में फिल्म समीक्षाएं विशेष रूप से सराहनीय हैं। विद्यार्थियों ने ऐसी फिल्मों का चयन किया है जो तकनीक और मनुष्यता के बीच के संघर्ष और सामंजस्य को दर्शाती हैं। इनमें विषयों की गंभीरता, भाषा की परिपक्वता और विश्लेषण की गहराई स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। हमें यह बताते हुए भी अत्यंत हर्ष हो रहा है कि इस बार की पत्रिका में भोजपुरी कविता का अनुवाद पहली बार शामिल किया गया है। यह न केवल भाषाई समन्वय का उदाहरण है, बल्कि यह दर्शाता है कि हमारी छात्राएँ लोक बोलियों के साहित्य के प्रति भी उतनी ही उत्सुक और सजग है।

इस उत्कृष्ट संकलन के लिए प्राचार्या महोदया का हम हृदय से आभार प्रकट करते हैं। उनके प्रोत्साहन और मार्गदर्शन के बिना यह रचनात्मक कार्य संभव नहीं हो पाता। उन्होंने सृजनशीलता के हर स्वरूप को महत्व दिया और विद्यार्थियों को अपने विचार स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने का मंच प्रदान किया।

हम विशेष रूप से हमारी छात्रा-टीम की ऊर्जा, लगन और रचनात्मकता की सराहना करना चाहते हैं। उन्होंने विषय चयन से लेकर अंतिम संकलन तक जिस निष्ठा से कार्य किया है, वह प्रशंसनीय है। यह पत्रिका न केवल उनकी मेहनत का प्रमाण है, बल्कि उनकी सामूहिक सोच और सांस्कृतिक दृष्टिकोण का प्रतिबिंब भी है।

संपादन मंडल की रचनात्मक भूमिका भी अतुलनीय रही है। उनके सतत प्रयास, रचनात्मक दृष्टिकोण और संपादन-कौशल ने इस अंक को वह रूप दिया है, जो आज आपके सम्मुख है। डॉ सुश्री मोनिका जुत्शी, संजय कुमार सिंह, सुश्री पल्लवी, डॉ नीति पाण्डेय, डॉ उपासना इस्सर, डॉ तरुणा, श्री अवनीश, डॉ शिप्रा गुप्ता और डॉ सुश्रुत भाटिया — आप सभी को हृदय से धन्यवाद और साधुवाद। आपने न केवल शब्दों को सजाया, बल्कि विचारों को दिशा दी।
इस अंक को पढ़ते समय, आप सभी पाठकों से निवेदन है कि केवल रचनाओं को न पढ़ें, बल्कि उनके पीछे छिपी सोच, संवेदना और दृष्टिकोण को भी महसूस करें। यह केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि एक दर्पण है — जो हमारे समय, समाज और सोच को प्रतिबिंबित करता है।
आप सभी को शुभकामनाएँ।

सम्पादक व संयोजक
प्रवाह समिति
डॉ रक्षा गीता

PRAVAH MAGAZINE COMMITTEE

Principal Professor Meena Charanda

i)Convenor- Dr. Raksha Geeta
ii) Co-Convenor- Dr. Monica Zutshi
iii) Member (for Sanskrit)- Dr. Divya Mishra
iv) Member (for Sanskrit)- Dr. Richa
v) Member (for English)- Mr.Sushrut Bhatia
vi) Member (for English)- Ms. Shipra Gupta
vii) Member (for Hindi) - Dr. Sanjay Kumar Singh
viii) Member (for Hindi) - Ms. Pallavi
ix) Technical Team- Dr. Neeti Pandey
x)Technical Team- Dr. Upasana Issar
xi)Photograph Team - Dr. Taruna
xii) Photograph Team- Mr. Avnessh Kumar

<u>STUDENT TEAM</u> -

Maansi Gupta (Hindi hons II Year), Muskan Kumari (Maths hons. II Year), Anushka (Maths hons. II Year), Kavya Chauhan (English hons. II Year), Deeksha Gupta (political sci.hons. II Year), Divyansha Batra, (BA.Prog. III Year), Vandana (BA.Prog. III Year),Shagun Singh (Sanskrit hons.II Year)

COMMITTEES

Internal Quality Assurance Cell (IQAC)

Annual Report Committee

Student Union

Academic Journal Committee

COMMITTEES

Sports Committee

Rajbhasha Samiti

NCC Committee

NSS Committee

ENGLISH SECTION

Farhat Zia Saifi, B.A. Programme, I Year

STUDENT EDITORIAL

“In the beginning, God created…”

These words depict not only the origin of the universe, but the very idea that to create is divine. Across periods and cultures, creation has always been a sacred act, an expression of something greater, yet something profoundly human.

To create is to manifest the intangible. It is to turn thought into form, silence into melody, void into substance. From the prophets and poets of yore to the artists and storytellers of today, the creative act has been a testament to our shared humanity.

In this issue of Pravah, we explore the theme of 'Creation: Machine, Humanity, and Literature', and invite readers to reflect on what it means to make something from nothing in today's rapidly evolving age. While machines are capable of imitating design, they cannot replicate souls. They cannot feel, break, grieve, or hope. And in that lies the essence of it all. Code cannot dream, think, sense, or go beyond what it has been trained to do.

As machines work with speed and precision, we should ponder and discern what the new boundaries may be. To inhale a satiating plate of food at a restaurant, to witness immortality in frames at the cinema, to have tingling ears after a concert, to appreciate the wrinkled hands crocheting the cure to cold, to read the poetry bled out through a combination of letters – all these and more beg the question: what sets human creation apart?

Clay becomes a sculpture not by chance, but through the pressure of hands that insist on meaning. The earth holds rocks which were once rubbed together by human hands to create fire. She yields grain and fruit so those hands could make bread and wine from it. When a mother births with a love so feral, it rips her apart – Creation is not merely an act of making but also a process of becoming.

Through the voices featured in this edition, we celebrate what is uniquely human, flawed and full of life. We honour the stories born not from code, but the need and desperation to express what is and to untie the knots within.

We express our sincere gratitude to the entire editorial team, whose vision and dedication brought this edition to life.

Furthermore, we are grateful to Ms. Monica Zutshi for providing us with this wonderful opportunity under her meticulous guidance. We would also like to extend our heartfelt thanks to Mr. Sushrut Bhatia and Ms. Shipra Gupta for their unwavering support, guidance and understanding throughout the process, without which this magazine would not have come to life.

CONTENTS

S. No	Content	
1.	Carvings of Man	
2.	Mechanical Bird	
3.	The Self-Created Epidemic	
4.	Feed	
5.	Unnamed	
6.	Would I Have a Life?	
7.	Fallen's Soliloquy	
8.	Robot: Film Review	
9.	Last Ones Left	
10.	Dialogue between Mankind and Nature	
11.	Lantern's Lament	
12.	Between Stillness and Chaos	
13.	Soft Men	
14.	Blue and Grey	
15.	Black Swan	
16.	Fallen's Lament	
17.	A Sweet and Bitter Glimmer	
18.	Yonder Land	
19.	Cocoon to Wings	
20.	Familiar	
21.	Branches of the Dead	
22.	Simplicity	
23.	The Muse of Forever	
24.	Can Sisyphus be Helped?	
25.	For Darla	
26.	The Fleeting Pests	

Carvings of Man

Priyanka Chaturvedi, B.A. Programme, II Year

Has anyone ever been loved?
Neither the creator, nor
The creation - for whom do
Values exist?
What is the line between
Sinking and piercing,
When Pygmalion unsatisfied
Dug his nails into the hollows of Galatea's cheeks,
Dug his nails into the insides of Galatea's core?
Is there any truth to Galatea,
When she was merely an echo
To a man's needs -
A perfect mirror polished to his desires
Not a breath of her own, nor a pulse?

The softness comes to life
Brings gentle caresses into life
Of the deprived.
Aphrodite's mercy -
When did goddesses not go wrong?
Such delicacy is foreign
Where murky skies lay;
They cast a gloom
Everywhere they reach,
Leaving delicacies in hands
Of their own negligence
Because in whose hands
Has anyone ever been loved?

Mechanical Bird

Sarah Dar, B.A. (H) English, I Year

Weaving through the crowds, I heaved a sigh for I was finally out.
It was a curious sight, with a small figure hidden by those triple its size,
Its adorable chirping was a healing sight, as its small wings moved around in a delicate light.
The feathers, almost life-like, along with its eyes,
"It would not take long," to anyone questioning the sight.
Seeing the cogwheels turn, I wonder, would there come a time-
Where I reach inside and pull out my life?
With wires sizzling in my hands, instead of a beating heart,
Would I still be a human and that still be a bird?

The Self-Created Epidemic

Rhea Kapoor, B. Com (H), II Year

Imagine living in a world where a small device holds the capability of connecting you to any person in any corner of the world yet at the end of the day you are left with a void of nobody truly understanding you. Literature has forever said that a world more connected doesn't mean a world more *connected,* a world where we feel fulfilled, a world where nobody feels alone and a world where loneliness is just a state of mind and not an epidemic. The question to ask ourselves is that despite having our phones ringing with notifications, with our inboxes filled with messages, when was the last time we truly felt connected? The sad part is that a machine built to help humans with physical labor is becoming the solace for peoples' trauma and frustration. It really makes you wonder that in an era of AI where we are losing our art, our culture, our intellect to a machine, is it fair to lose our emotions to it too?

While Gen Z is the most advanced and upbeat generation ever, they are the ones who are constantly under the scrutiny of perfectionism, a mirage built by social media, advocating for how everything is supposed to be so perfect and if it isn't, well, then you are living an unfulfilled life. The most ironic part is that these social media algorithms are made to be relatable, so you think that, "Oh, even this app understands me better than my friends!", automatically insinuating that a machine is capable of understanding theunheard more than the people in your life. They can't help you the way machines can. Humans truly are the most unpredictable creatures. Imagine creating a world of science, literature, art, society, culture and then losing it all to technology, which ironically, is also a creation of humans! So, while we preach

about human creations, be it literature, machines or humanity, the question to ask is, "Why does one creation come at the expense of the other?" It is like a negative tradeoff between machines and humanity, where tricking people to sell an AI product by making it more "relatable" and human friendly holds more value than a person's emotional well-being.

The next time you lose yourself to technology, remember, just because it makes our presence more visible doesn't mean it is making us more seen. It gives us an impetus to share our thoughts, when in reality we are shouting towards a black hole, hoping at least one person would care. AI is built through human advancement but honestly, it is making us more regressive. It metaphorically strips us of our capability to think, to feel and to love. So, while it is the next best thing, it isn't a real person who is capable of loving and feeling vulnerable. This might seem like the most Gen Z thing to say but, go touch some grass, and meet real people who make you feel like a human and not a robot who might force you to essentially learn gibberlink. Yes, it's a real word, it means the feeling of being seen by AI.

Sadly, we have transitioned from a world where once, one person, one letter, one true friend meant so much to us to a world, where having 100s of people like your Instagram post still feels "less." In the end, let us just use machines for making our tasks easy and not for making us feel emotions that are an illusion to sell a product and profit from our vulnerability. It's easy to mistake convenience for closeness, but real closeness isn't about social media glamour or an internet robot who understands you better. It's about being genuinely seen, understood and felt

Feed: A Dystopia Or A Future In The Making?

Sanchita Maji, B.A. (H) English, III Year

As science and technology progress, humankind loses its morals in a hyper capitalistic society. That's basically what M.T. Anderson's 2002 published "Feed" is all about. What's interesting is that all that happens in the novel isn't such a far-fetched dream. The main protagonist, Titus, often visits the moon with his friends and it's not that big a deal for them. They are born with inbuilt chips in their minds that constantly boost their "feed" controlled by big corporations. They're not just controlling their content consumption but also their whole being. Ads rolling out every second turns them into mere preys for a consumerist culture. We live in this reality too. Even today we see big companies like Virgin & Tesla making space travel possible like it's taking flights from one state to another. generation has turned into one of the biggest contributors to pollution in terms

through social media channels, our With AI and constant ads pushed upon us footprint. As reports from the Guardian says, "Figures are debated but an estimated 10% of annual global carbon emissions originate from the fashion industry." Even with Titus, he feels instantly gratified after buying a product, yet he doesn't remember the reason why he bought it in the first place. Much like micro fashion trends that don't last in our wardrobes. But, if we are heading towards doomsday, then what should we do? We can take a cue from the incoming character, Violet Durn, who had some sanity left in her, given that she got the Feed implanted later on. She understood the pattern in which the Feed acted upon and resisted it in its own way by bombarding it with different images. This individual's act of resistance is what we need, and it's only with our awareness of what's happening around us will we find the power to go against these big giants that control us. Or else, we would also start cutting trees to create oxygen plants.

Vanshika Jindal, B.A. (H) English, II Year

Committed to not Unnamed

Avni Chaudhary, B.A. (H) English, II Year

Committed to nothing. The wilderness of existence, doing anything but coming back is more different. The rage, the purpose a person has, can I remember every single detail I came across in this lifetime? Late September sun streaming through the window, bunches of grapes on the table, spoonfuls of hot coffee rising to my lips, filling me with what endures. However big or small that moment feels, but it feels.
"Mothers and daughters existing as wretched mirrors of each other,
I am all you could have been, and you are all I might be."
Intrigued by this magic, will forever be.

Constantly evolving. Every time someone thinks they understand me;
I add a new color or texture to the crinkled piece I already am.
Being observed but never dived deep into.

Reality is a very ghostly concept, suggests, suggests and keeps on suggesting

>>>>><<<<<<

Would I have a life?

Sarah Dar, B.A. (H) English, I Year

Hearing the humming once again,
I clenched my empty hands
What once carried money,
Now stayed in a hurry.
Every movement-precise and right for no oneto find it funny
Yet, no matter how fluid,

Would I have a life?

Sarah Dar, B.A. (H) English, I Year

Hearing the humming once again,
I clenched my empty hands
What once carried money,
Now stayed in a hurry.
Every movement-precise and right for no one to find it funny
Yet, no matter how fluid,
The rhythmic movement looked upon us with mockery.
Every step, every delay, another reason to not take us heavy…
Staring at my dry and cracked hands, I wondered:
Would my life be better if I was a machine or would my life still remain?
There was little difference between the two and all I could do was walk-
Because at least I had that right, albeit not for long.
>>>><<<<<

The rhythmic movement looked upon us with mockery.
Every step, every delay, another reason to not take us heavy…
Staring at my dry and cracked hands, I wondered:
Would my life be better if I was a machine or would my life still remain?
There was little difference between the two and all I could do was walk-
Because at least I had that right, albeit not for long.

Fallen's SoliloquyRashi Vyas,
B.A. (H) English, II Year

I guess this is the end;
No breath to take, no words to send.
Carried high on weary hands,
Oh no, they are wrapping me in cloth...
Will they tie me too?
It came so sudden, yet felt so near,
A distant shadow I long feared.
Now, silence hums where heartbeats stayed,
A name once called, now softly fades.
I float between the wailing cries,
Lost in their grief, unseen by eyes.
The world moves on, yet I remain
Drifting through the threads of pain.

The pyre awaits, the flames draw close,
Their golden tongues in solemn prose.
I feel the heat, yet know no pain,
Flesh dissolving, ash and rain.
The wood beneath me starts to groan,
Ember's dance, the air is torn.
Smoke rises high, a ghostly shroud,
the echoes swallowed by the crowd.
People chant in voices grim,
A chorus sung in twilight dim.
Curses, prayers, and whispered pleas,
Mourning swept upon the breeze
>>>>><<<<<<

Robot: Film Review
Lakshmi Priya, B. Com (H), I Year

The film ENTHIRAN (translated as ROBOT) is a 2010 Indian Tamil-language science fiction action film. It is the first film in the ENTHIRAN film series, co-written and directed by S. Shankar. This film, after being stalled in the development phase for nearly a decade, its principal photography began in 2008 and lasted two years. The film stars Rajinikanth in the main dual lead role as a scientist and the robot he created. Aishwarya Rai Bachchan, Danny Denzongpa, Santhanam and Karunas play supporting roles.

The movie, in a very nice way, depicts how humanity and machines are related. The story shows the battle between a scientist (showcasing humanity) and his self-made humanoid robot (showcasing machine). This movie, in a very simple way teaches us how machines, if treaded carefully can help us in many ways. But if not, they can be a disaster to mankind. The storyline revolves around the struggle of a scientist named Vaseegaran who seeks to control and train his android robot who looks like him) named Chitti. Chitti is built in such a way that he learns to understand human emotions, thus, comprehending and exhibiting these emotions. Vaseegaran along with his girlfriend, Sana, trained Chitti well enough to serve in the Indian army. However, this plan backfires when Chitti falls in love with Sana and is later manipulated by Vaseegaran's mentor, who is adamant to defeat him, into becoming a homicidal maniac.

The director's approach towards bringing the story to life was commendable. The movie was lucid enough even for a person with basic technical knowledge. The way all the actors played their roles, the movie came out entertaining. The movie gives us an inference that a machine's actions are directly proportional to a human's emotions. Machines are reflections of our intentions. It can be concluded that machines are bare imitations, humanity can be brought to machines through a positive approach. Machines can be taught to bring peace to mankind as long as they are away from the hands of cruelty; after all, again, they are bare imitations. It can be concluded that machines are bare imitations, humanity can be brought to machines through a positive approach. Machines can be taught to bring peace to mankind as long as they are away from the hands of cruelty; after all, again, they are bare imitations.

Last Ones Left

Priyanka Chaturvedi, B.A. Programme, I Year

Seventeen years
We have spent
following these
Exact awkward, barely
synchronized steps -
Each stroke a different
hue.
Toned down whispers
escape our lips - tired.
Botched, as they may
seem, but
Only we know the
efforts
We are making to keep
From faltering
altogether -
All the while,
Unconsciously
panicking.

It's quite funny how I
always forget,
And how you'd always
recall.

We tell ourselves,
"They've done what
they have done,
We've swallowed
whatever was to be put
up with.
And now, it is what it
is."For we are truly
apart - something we'd
always weep for.

I realize now, the way
Myself had become a chamber
all damp and gloom
And you were shut within.
Here, we stand now, looking
through wandering eyes;
Yet words swim inside my head,
Desperate as they must be, but
not fully ripe
To roll off my tongue.

Hours seem to lack the courtesy
of waiting -
Just for a little while longer.
Looking through the curtains, I
see as the
Night rolls down, the stars
eventually unveil the moon,
Its soft light - in all its nakedness
- making its way
Through a slender path.
The creaking floorboards sing
their own melody, while
There develops a saddened lilt to
the sweet breeze.
It carries the smell of lilacs -
permitting me a whiff.
Entering the caliginous cage,
Through the velvet drapes, You
and I have learnt together,
I need not be in disgust with
you;
You are part of me.

The norms set by society
Mean naught to me,
For I know now, no matter
what their looks say,
However, may the stigmas
feel –
The slow and heavy
silhouettes of the bare oaks
and
Green towering pines, as
though attempting to
Sneak views at the beautiful,
humane chaos
Unfolding inside.
Arms delicately descending,
Undraping,
And we float apart -
Out of reach.
While my breath rises and
Forms obscure rings above,
The harsh air - I feel the
loneliness,
Detachment -caresses my
skin,
Sending shivers down us
both.

But I should feel free, as
should you,

Dialogue Between Mankind and Nature

Kashvi Sethi, B.A. (H) English, II Year

Mankind:

I laugh at my own feat, I notice everything with Care
I glare at my own feet, couldn't stand there
What is that you have? What did have I?
You had it all, it owned you, you owned it
Snatching it all I wasn't even shy
What gifts do I return you? I've taken them all
Standing in front of you I still am small
Call me a beggar, O call me a robber
Brand me a culprit, I am the thief
Pulling away even the last leaf
I shall go, disappear, shall I?
Tell me O mother, tell me my owner
I was the occupant, holder was you
Took you for granted, I killed you.

Nature:

O dear, listen to the words I say
I stay here forever
No matter how much the sky is grey
Night might stay for dark hours
Days shine brighter, O man I am a fighter
Nature, some call me, infinite some utter
Half of me is missing without the flesh that makes me better
Glory, I deserve, a chance you do
Snatch nothing, I have, a bit I have for you.

>>>><<<<

Lantern's Lament

Kayra Tak, B.A. (H) English, III Year

Thy creaking yellow glass,
Grows thicker under shame.
Disgraced by thy self-written stories of infamy
With no audience to tend to.
With no impressions to absorb.
Grows on thee, thy lamp thickens, thy yellow deepens.
Bellowing below to benign beings,
Bartering the battered bruised self.

Come hither, sing the ballad.
Weak calls die easy and young,
Less pain is not enough to cause worry.
Ochres paint a sunset that never sets.
Thou shalt set with it.
Flickering flames in a lamp afar,
Weakened before this weary night.
Is it breaking? Is it heaven yet?
Art thou immortal under it?
The fire burns, 'tis still cold.

Between Stillness and Chaos

Akshya Pathak, B. Com Program, IIYear

Sometimes, the most mundane days turn out to be the most interesting. Sometimes, roaming around alone brings the deepest sense of companionship, revealing things you'd never notice when surrounded by others. Sometimes, ambient noise feels like the purest form of peace. Sometimes, wearing the simplest clothes makes you feel like you own the world. Sometimes, doing absolutely nothing feels like the most fulfilling use of your time.

But that's the duality of being human, isn't it?

Sometimes, the most exciting days feel the emptiest. Sometimes, solitude feels exhausting. Sometimes, the gentle murmur of people feels overwhelming. Sometimes, the prettiest outfits make you feel most out of place. Sometimes, working tirelessly leaves you questioning if you did enough.

Isn't it strange? How we live between these opposites, never quite settling in one place, yet finding comfort in the spaces between.

Suhani Pal, B.A. Programme, III Year

Soft Men

Rhythm, B.A. (H) English, II Year

I have seen men, strong as stone,
Yet softer than the morning sun-
Moving, breaking, bending, mending,
Bearing burdens, never ending.
I saw a man push his cart in the rain,
Selling fruit, through loss and pain.
His hands were rough, his face was worn,
But in his eyes, the dusk and dawn.
The rich man, the poor man- each the same,
How light they must feel, in that brief
Escape from chains of silent ache,
A moment given, not to takeBut the world has taught them steel and stone Toiling outside, lost in the game.
Brick by brick, they build and stand,
A fortress made of calloused hands.
.
They are the walls of a mighty fort,
Standing firm, holding court.
Acting strong, providing grace,
Knights without a shining face.
Yet tell me, who lets them weep?
Who holds them when they fall too deep?
Who tells them, "It's okay to feel,"
That breaking does not mean they're weak?
I have seen a man cry once-
A rare and precious sight to see.
Tears traced the scars of years,
And at that moment, he was free.
Oh, how beautiful they are in grief, To stand unshaken, all alone.
Soft men, strong men- caged in might,
Yet still, they rise, still, they fight.

>>><<<

Blue and Grey

Priyanka Chaturvedi, B.A. Programme, I Year

Grey. Grey is the color of the smoke rings in my mind as they rise up and above, floating further into the blue of the sky that is out of sight. My vision blurs; I shake my head slightly in disapproval, perhaps. I bend a little to lift the cartons one by one, as I cannot wait any longer, I know. I glance over my shoulder and try to make out the hands of the wall clock, past the tresses of my hair blocking my peripheral view.

12:06: We need to set up the room by 13:00, as we had previously decided, to make at least some progress on Miss Anne's portrait.

I understand it best to simply set the cartons down where they are needed and open each one at the end, or when necessary. I carry perhaps the sixth one, placing it next to the almirah where I will set up the canvases for Miss Anne to choose from for her portrait. Just then, a tiny object flies toward me, striking my left eye sharply, causing me to drop the cartons abruptly. I rub my eyes, trying to soothe the discomfort, and find a tiny white feather in my hand through the reflection in the mirror. White, the color of a swan… I would like to dream.

But where did the mirror come from, and from where did the feather appear? There is neither a mirror nor a window in this room, in this tower.

The worst invention for a human being is a mirror—or so the quote goes. As an artist actively at work, I prefer not to let my gaze wander to the sky, nor into nature, nor upon my own flaws. This is why (or at least that’s how I console the guests), there has never been a mirror nor a window in my abode.

So, I feel strange as I gaze into the mirror, but before I can question my appearance—one I haven't encountered in perhaps half a decade—I am stunned by the silhouette of a woman in all white, glowing with an almost blinding, cold white light.

"Miss Anne?" I presume. "I'm a bit late, kindly pardon me, and please wait outside, or wherever you please."
"Take my hand, love," she says, "Let's skip the formalities for today, for we are, after all, in solitude."
I turn around, staring at her, most likely in a perplexed state, for she appears, in every way, completely different from how I am used to seeing her.
"Miss, what do you mean?" I ask her, but she does not respond. Instead, she hands me a key. A beautiful key, one I recognize, but I do not understand. Yet, I try to find the lock she gestures toward, upward, toward the sky. The clouds are grey, and unlike the illusion they gave earlier, they now carry a hint of lavender in the sky. There are pinkish hues on one side of the sky I can see, making it look as though the pink is chasing the blue in its vastness, stretching behind my head.
I look all around me, frantic. I find myself in the sky. In the sky? What does that even mean? How is this happening?
"Miss, what is happening?" I ask, bewildered by the greenery of the trees, the vast sea in a multitude of shades of white and blue, reflecting the blinding glow of the afternoon sun, and the sky. Blinded by all these colors, I only understand the absence of color, save for the shades of grey.
"Do you see what the world has to offer?" she beams softly. This cannot be Miss Anne; it simply cannot. I have only ever seen her face in a constant expression of deep pain, almost physical, with her eyebrows furrowed whenever she'd have to, to her misfortune, look towards me. This cannot be Miss Anne. What is happening is beyond my understanding.
I turn on my heels, hoping to find the mirror again, but I am stunned by the feel of hard grains sticking to the bottom of my feet.
"Miss Anne, please, explain. I am completely out of my wits and cannot understand anything."
"What is it that you do not understand, my lady?" she asks, caressing my cheek with such tenderness that I mistake it for love. I almost turn my cheek further into the warmth of her palm. I shut my eyes, hoping to savor a few more moments of her affection.
"The colors, Miss. The place—how? Everything I—"
"Look at the moon, love. Do you remember what you asked me that day?"
"My inability to perceive colors?"
She hums in reply. I raise my palm to hold her in place and continue, before she finds it reason enough to leave. "The moon, it is white, and it is also black. Their beauty, when poets look at the moon, how even in its undeniably complicated surface, poets find solace and familiarity, even though it does not fit the standards of many others. I talk too much, and I ramble on, without reaching any conclusion, Miss Anne…"
She smiles so softly when I open my eyes that I feel as though I should melt if I could.
"'What is it in me that's so grey?' you asked me. You said I would know, for certain, didn't you?" I nod. Her palm falls, but her closeness still warms me.
"What is it in you that you have yet to discover? You should ask yourself, not me." She lays her warm palm over my forehead, caressing it until her fingers reach the back of my ear.
"Take this," she says, handing me a feather in a beautiful blue hue that I have never seen before. "And ask yourself. Miss Anne is waiting for your hand, kind one."
I blink as she steps back into the cold white glow, ascending into the sky, and tighten my grip on the feather she gave me. I feel I now know what to say to Miss Anne when she comes. Despite the usual annoyance she puts up whenever I approach, she must answer me—and herself—today.

Black Swan

Rashi Vyas, B.A. (H) English, II Year

In a world of mirrors and whispers,
I dance on glass, my heart in a twister.
Striving for perfection, I push myself harder,
To be the best, to stand out as a starter.

But in this pursuit, I lose sight of who I amCaught up in the dance, like a broken dam.
The darkness surrounds me, its grip so tight,
As I struggle to find my inner light.

My soul, a black swan, trapped in a cage,
Yearning to break free from this self-made stage.
The price I pay for perfection's embrace
is losing myself in this endless chase. The darkness seeps through my veins,
Filling my mind with its haunting strains.
Yet, I must keep dancing, put on a show,
Hide the pain, let no one know.

Whispers from within, the black swan's plea,
To embrace my true self and set myself free.
As time goes on and the dance goes on,
My once vibrant ballet turns black and wan.

In the mirror's reflection, I see the toll,
A hollow gaze, a weary soul.
My body frail, my spirit worn,
From neglecting my needs, my heart is torn.
The pressure to be great, to be the best,

This pursuit consumes me, my every stride,
In search of perfection, I've lost my guide.
But still, the darkness creeps, its flames grow higher,
As I dance and dance, consumed by its fire.

The music that once lifted my spirit, now a haunting reminder of my plight.
I whisper to myself, "I am but a shadow in this light."
have become the masterpiece I sought to be,
And as my body lays lifeless on the stage,
The Black Swan lives on through me,
My final and greatest work of art.
For in my death,
"I have achieved perfection."
The Black Swan has consumed me,
leaving behind only my lifeless shell.

>>>><<<<

The Fallen's Lament

Deeksha Gupta, B.A. (H) Pol. Sc, II Year

Tell me, thee, malevolent more—who is father mine? Can thine eyes not see?
Evil is their doing, yet the blame, always, is laid upon me.
Love thou gavest them, always, a creation more beautiful in thine eyes than I.
But blind hath love made thee—gaze upon them, father, see the true demons praying at thy shrine.

Father mine, enlighten me—how is it I who is named evil, and not them?
They call me the Tempter, yet it is their own thoughts that lure them to sin. See it, for once—condemn!
They possess not feathers of fire yet wield the power to burn thy world to the ground.
Masters of deceit, they have lied even to thy face—yet it was I who was named the Prince of Lies.

What canst thou do, Father mine? A heaven upon mortal soil is a dream failed thine.
Never shall Michael find home among them; they will turn him from thee, they will make him a swine

Son mine, I hear thy cries; the pain in thine eyes I see.
Man, and the Morningstar—both beloved to me, branches and stems of the same tree,
And I, the trunk, standing beyond time, beyond life,
Watching as man fulfills his destiny—and thou, thine.
A being with open eyes, art thou not able to see?

I made a fire, and I decided what the flames would consume.
I made the truth, and I choose when lies shall overshadow it.
Every land is mine; every land is heaven—Michael's home is wherever he stands.
How long, son mine, wilt thou refuse to believe?

Deeksha Gupta, Pol Sci. (H), II Year

A Sweet and Bitter Glimmer
Swastika Khanna, B.A. (H) History, II Year

I missed out on a major phase in my life,
When nubility was supposed to hit,
With bigger bosom and redder cheeks,
And blood rushing into my veins.

My coming-of-age,
Was marked by,
Concrete tasting syrups, and,
Multi-hued tablets

When it was my turn,
To get drunk on the
Elixir Of Life,
He, sucked the
Color out of my life.
With eyes
Farther into my sockets,
The skin-
Somehow pallid yet dark,

I had never felt more comatose.

Shackled to the metallic bed,
I slept, and slept,
Until I woke up new.

>>><<<

Yonder Land
Kayra Tak, B.A. (H) English, III Year

Frantic souls, frantic fools,
Oh, the tales of yonder land.
Wonder and wisdom, wonder for you.
Wonder doesn't draw eyes.

Insignificant Predicament,
Close to one, closer to none.
Consecrated Charade,
Faith folds for higher baits.
Fleeting moments,
Your artwork fades.
Fragile faiths, preys of yonder land,
Fragile faiths gamble with fates in yonder land.

Cocoon to Wings
Rhythm, B.A. (H) English, II Year

Beneath the boughs, where shadows played,
She lay cocooned, in silence, stayed.
Wrapped in threads of tender care,
The world watched over, unaware.

A fragile shell, a shield so tight,
Guarding her dreams from the light.
The winds would howl, the rains would fall,
Yet she was safe within her wall.

The world around would often say, "Rest, dear one, keep fear at bay."
But whispers called from skies above,
Of strength untapped and wings of love.
One dawn arrived, a golden hue,
The shell had cracked, and she broke through.

The girl who once the world did shield,
Stood tall, her strength and will, be revealed.

No longer bound by fear or thread,
She soared where daring hearts had fled. Her colors bright, her flight so free,
A butterfly for all to see.
The world had kept her safe, it's true,
But wings were hers to break into.
For every girl must one day find,
Her strength within, her dreams unlined.

And as she flies, the skies proclaim,
A woman now, she owns her name.
Once cocooned, now bold and high,
Her past a whisper, her future the sky.

Familiar

Nirananda Jindal, B.A. Programme, II Year

When Aasha took the first bite of her meal, she muttered under her breath, "The salt…"

Almost instantly, a woman's voice chimed in—gentle, concerned.

"Is everything alright, dear? Do you need anything?"

Aasha looked up to find a kind-faced woman leaning toward her, with worry softening her features. The worry, Aasha guessed, had something to do with her. But before she could ask anything, a heavier question took precedence—Who was this woman?

In fact, now that she looked around, the only thing she recognized was the food.

Fear licked at the edges of her mind, but she wasn't stupid. She smiled, nodded, and quietly finished her meal, playing along.

That's when the woman stepped forward and gripped the back of Aasha's chair—no, wheelchair.

A wheelchair?

Another strange discovery.

Once she was wheeled back and left alone in "her" room, Aasha got to work.

She had three questions and zero answers:

Where was she? Why couldn't she walk? And who were these people?

The room was filled with clues—a full almirah of books, stacks of journals, and scribbled notes. Whoever lived here had a sharp mind, Aasha thought.

It took only five minutes of searching to find two curious things: a photo and a shiny, expensive-looking envelope.

The photo showed a graduation ceremony. At the centre was a smiling woman in robes—it looked like… her? And the woman kissing her cheek, brimming with pride—was that… her mother?

Aasha wasn't sure if the realization brought comfort or more confusion.

She turned to the envelope. Inside was a single, smooth sheet of paper—completely blank.

Why would someone preserve an empty page like this?

Then, it flashed. A single phrase blinked across its surface:

"I'll tell."

Aasha gasped.

The sheet was blank again.

Cautiously, she picked up a pencil and wrote on it:

Hello.

The words sank into the page and disappeared. A moment later, new ones emerged in glowing script:

Hello!

She stared. Her heart raced.

What is happening?

We're talking.

Who are you?

I thought you'd remember. You made me. I'm your assistant—Heart Map.

Who am I?

Here we are again…

What do you mean?

Your name is Aasha.

Okay… tell me more.

You'll need to complete a task first.

What task?

Clap five times.

Sure. Done.

No, you didn't.

…Sorry. Done.

Well done, Aasha. You're a musician. And a chemical engineer.

What?

Next task: eat the tablets in the tray.

Why?

I thought you were familiar with the drill.

…Done.

Very good.

Why do I feel... sleepy... now…

Somewhere, outside the door, voices floated through:
“It’ll be hard for a while, Mrs. Bhosle. Deciding to take your own life… that doesn’t come out of nowhere. And the spinal injury…”
“She’s not crazy,” the nurse said quietly. “She’s just…coping. The same drill. The same familiar drill, every single day.”

Won 2nd position at Woven Whimsy, the Creative Writing Competition held by Mitrakshar, the English Literary Society of Kalindi College.

Shivangi Yadav, B.A. Progamme, II Year

Branches Of The Dead

Priyanka Chaturvedi, B.A. Programme,
I Year

They say that if you walk into a room and notice the absence of something, it means it is still there. Well, maybe not now, but it was from when I can recall.

I feel myself corroding from the inside out, the rot getting to my insides, which twist and turn within themselves as I fight the stench off of my mother's decaying self. Her body turns into herself, becoming more and more fragile as the hours go by. It has been like this since I escaped the little cage she'd set for me, sheltering me into her safe womb, which only seemed to suffocate me into her body further and further, the more my torso bent towards what the outside offers.

"Nothing exists past the windowsill," is how she lulls me in, as her roots tighten their grasp, and her hand gently makes its way. I wait for it to cradle my cheek; hope for it to bring me peace which I cannot fathom for all I seem to long for is just the slightest peek into all that lies above and beyond the shadows cast upon me by my mother's loving embrace. I am ungrateful: her hands which had been delicately moving towards me now hold me oh so tight, bring my head back so further down that I cannot even rest my eyes upon what I long for; the cruelty in her eyes turns into contentedness upon making sure I do not drift away from her embrace. If she were the same mother that had lulled me into oblivion whenever it was that I bled when my tiny leaves were plucked, I swear I would not doubt her love once.

"You are fragile, you will break. Oh, what if you do?" but I long to see: I will for a feel of the heady heat of June scorching its wrath down upon my fragile body; I will for the dry winds of March to set me in a flurry; I will for the harsh acidic rain of August hitting my body, possibly even stripping me of my leaves. I want the good, the bad, and everything in between the world can offer me. But her hands have my throat in a chokehold; her cold icy stare bites down on my tongue so harsh that it bleeds.

She would let me bleed a blood bath but not hear a word from me.

I twisted my thin body in every crooked way possible, ignoring the sounds of it tearing up, bringing it farther away from her as the hours would go by. The bloodier the turn, the subtler I move - what's some blood to her in place of the tiniest hint into the moving distance, right? What's some pain when it bridges the gap between freedom and I?

It was painful to go through, to say the least. Not that obeying her words at the cost of bowing my back till it breaks was out of character for me, as a daughter, ever. Not that expecting her to overwater me despite my polite refusals was out of character for her, as a mother, ever. But it was how she held me in as her property; as if… if a single entity were to direct my gaze away from the world we shared, she'd lose it.

I swear, the love was there. I recall the gentlest of her caresses she showered me with, the sweetest looks of adoration cast down upon me, the kindest palms drawing me in if mine were to touch the thorns, the sincerest eyes enchanting my own from the paths of harm - whichever they may have been, for she was never wrong.

Until it changed, when I felt no more a daughter but an extension of her own self that she'd lose if I were to wander off too far. Until her caresses left harsh scratches over my developing skin and soft eyes reflected the heaviest of gazes that towered my fragile stem. But her own palms felt brazened; her own eyes exhausted; it was like the tiny being's reciprocation was all she required. Like a little bit of love will change her understanding. I knew no better, but to give. And so, I gave. I gave and I gave until I could not give no more. Until I felt myself rot into nothingness, allowing her to mold me her way as she pleased, but my gaze lingered.

I longed for more, more and more, and all that I could get a hold of. Only if my organs were not rotting, only if the stench wasn't all that I could sense all about my body, only if…

So, I moved, in the tiniest and most careful of movements, because the Lord forbid my mother should disapprove. The fear of getting caught consumed me still, until I was so far away that my fear was reflected in her eyes. Until I was so far away that I finally started seeing her wilting body for what it was, her aging self.

Her decaying self.

So soft seemed their embrace, their warmth when we were growing. As if all you need is that warmth to stop your tears, even when you're an adult, and she's probably not there. But why did we as younger ones get this gentle loving confusion? It was - was it ever, like ever really pure, really? When it was always followed after her harsh, hateful actions.

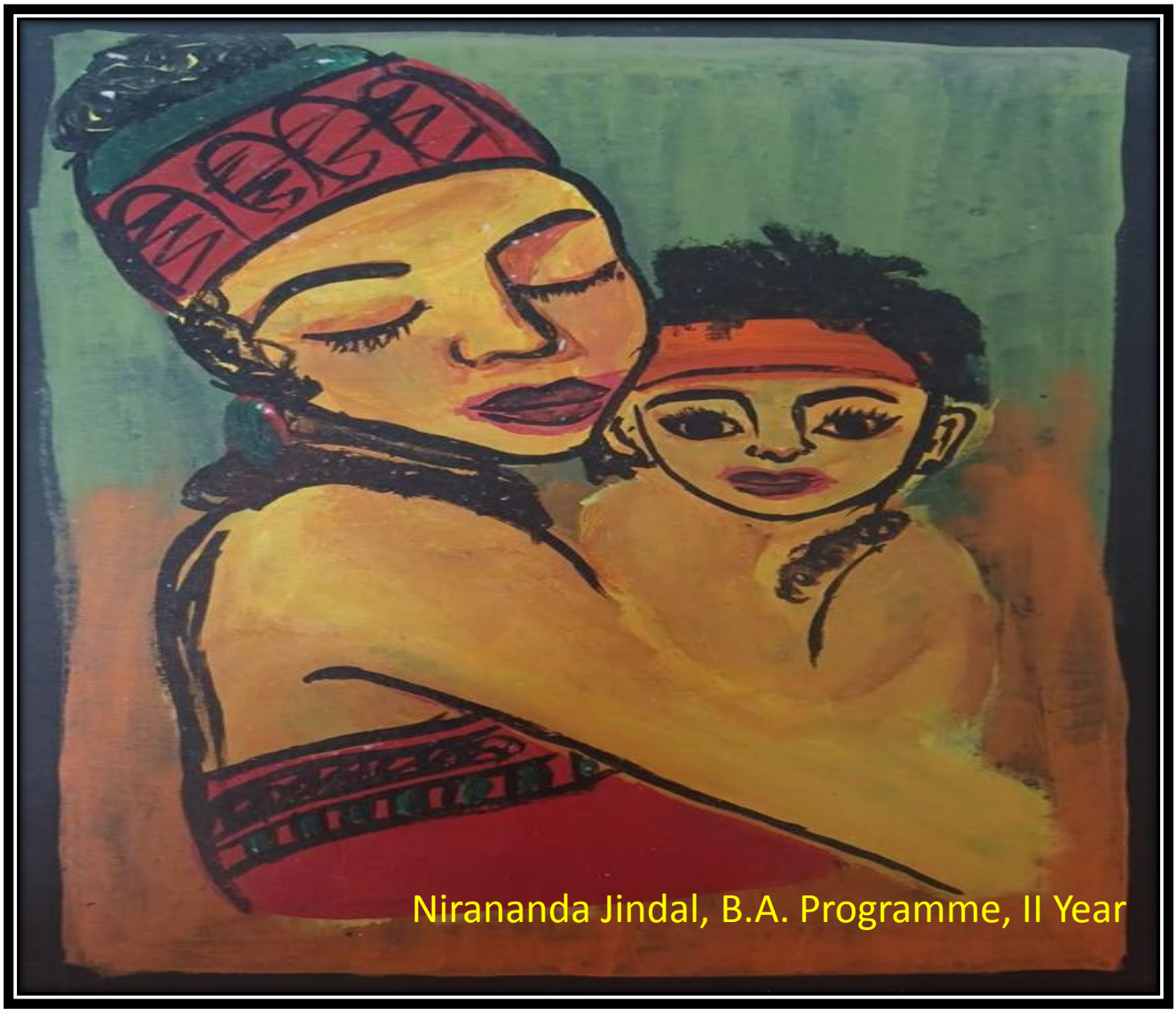

Simplicity

Divyansha Batra, B.A. Programme, IIIYear

The mornings at her place are so slow and quiet. The beaming rays of the sun entering through a creak in her drawn curtains makes her bedroom look like a royal haven with a bigger square footage. Her curly waves spread through her pillows as if she's sleeping beauty. There is a faint chirp of the birds coming in through the window. Everything is serene and calm.

Until it isn't. The harmonious symphony of the birdlife is interrupted by the buzz of the alarm clock followed by unflattering groans. The safe haven-ness of the glowing bedroom is overtaken by the chaotic unplanning and desperation to get ready to reach work on time. The slow peaceful morning has been replaced by an eager anxious rush; amazing differences a mere five minutes can make.

Of course, none of this would be happening if she just stayed on the family farm. She would never have had to work a day in her life with the last name she was born with. But she chose to walk a different path and live a different life. As a writer for a newspaper.

An overworked and underpaid job in a declining industry. That was, for reasons she can't remember right now, her dream – one that makes her leave her tiny, rented apartment with unkempt hair, in wrinkled clothes, and uncaffeinated on an empty stomach.

She contemplates calling her family back to 'check in' and 'see how they're doing' all throughout her metro ride until her lunch break when she is meeting her unusual best friend, me.

"So, I walked in 20 minutes late and if that wasn't bad enough, the editor in chief already gave out all the good assignments and now I'm stuck with a boring interview of a bakery shop owner that no one wants to read," Amelia complained, fidgeting with the wrapper of a burger I got her for lunch.

"Hey, small businesses are the heart of this town. But do you want me to walk in your office and 'make' your boss give you a good assignment?" I asked her, semi sincerely. I don't want to abuse or misuse this gift of mind control, but it's not an abuse or misuse if it is to make her life easier.

"No, Ivy. We talked about this. No usage of your –," she looks around the isolated parking lot and whispers, "powers for personal gain. It's selfish."

She had a good point. We first made that pact right after we discovered my power. I touched her cruel ex-husband who was up to no good on the shoulder, told him to walk away from her and never come back and he has not been seen since. Every newspaper in town has moved on from the story. I guess you could argue that it was for personal gain, but we didn't cause it. It was the first time the power showed up. We still don't know how or why. I like to think of it as the greater good. She's happier now and there is one less evil in the world.

She takes a bite of her burger and abruptly halts her chewing to say, "Oh my God. Please tell me you paid for these."

I chuckle and reassure her that I did. And not just because of how mad she got at me the last time I 'mind controlled' a deli owner into giving me free food.

She finishes her lunch and says, "I was thinking about calling home. See how they're doing. You know, check in."

"And?"

"And I'm not going to. They can get persuasive about the lifestyle they live and that can be hard to say no to. Again," she says casually.

"You sure you don't want that?" I ask, intrigued.

"Yes, I like this."

"This being eating fast food in the parking lot of the office of your boring newspaper job?" I reply, amused.

"Yes."

"Me too. This isn't so bad."

We share a smile, leftover fries, and comfort in the knowledge that we have each other. We always will.

Won Special Mention at Woven Whimsy, the Creative Writing Competition held by Mitrakshar, the English Literary Society of Kalindi College.

The Muse of Forever

Deeksha Gupta, B.A. (H) Pol. Sc, II Year

Feel the soil beneath my skin.
Close my eyes, see where it had been—
some thousand years ago,
so different from how I know.
But our feet feel the same still:
the same dirt, the same wild grass,
the same water boiling in the harsh sun.
I open my eyes and take it in—
the home I know, the home I see.
But beneath the shiny new covers,
I know it's the same still:
the same home that comes in my dreams,
tells me how it had been.

I see the change, and I see the light.
I hear little voices cackling in delight,
and I know there's a tomorrow I won't recognize.
But their hearts will always feel
what mine knows today.
A million moons from now,
splashing cool water on their faces,
burning desert sand beneath their feet—
the same mud, the same trees,
the same dirt, the same leaves,
different idols and different scriptures,
but the muse remains still.

A million moons from now:
the wisdom of old and the hunger of tomorrow.
The children pave their way,
but in them, they carry the forefathers.
Yesterday—so different from today and tomorrow.
A million rising suns,
a million different moons,
but it won't ever set—
hasn't for thousands, won't for even longer.
Because the scriptures change,
but the muse remains—
for today and tomorrow.

Won 3rd place at the Inter College Creative Writing competition at Lehren 2025

>>>><<<<

For Darla

Deeksha Gupta, B.A. (H) Pol. Sc, II Year

On the fullest night of the year,
many will defy,
only one will survive.
Most will be lost by dawn
but one will gain it all."

So, the whispers went, echoing through school hallways and muttered between office cubicles. Everyone talked about it, even those who rolled their eyes and scoffed.

"Prophecies aren't real," one kid grunted, arms crossed, standing in a huddle of classmates.

He said it like it was the most obvious truth in the world, but the unease in the others' eyes told a different story.

Oliver bit his lip, uncertain. The legend haunted him.

On that one night a year, they said, people climbed the tallest mountain to reach the ancient Nordic temple, if it still stood. Many would go, but only one would return.

They said that if you made it and survived, anything you prayed for at the temple would come true. Anything.

That was enough to drive dozens up the mountain, knowing full well the cost. To the outsider, it might look like greed. But in truth, it was desperation.

Desperation for the man whose wife had lost four children. For the father who couldn't afford to feed his family. And for Oliver, whose little sister had polio.
Maybe, if he made the climb—if he survived—his darling Darla wouldn't have to suffer anymore. And if he didn't make it? Well, that was a risk he was willing to take.
So, when the sun set and the moon rose, full and bright, Oliver slipped away. He hid behind school walls and stone pillars, heart pounding. He wasn't the only one. He heard a voice—low, hushed. Someone else was out there.
Just sneaking past the school gates took what felt like forever. Then came the forest—dark, humid, claustrophobic. He swam across the river that cut through its heart, soaked and shivering.
But nothing could have prepared him for what waited on the other side.
Bodies. Dozens. Scattered like fallen leaves. No wounds. No explanation.
Oliver froze. He considered turning back, until he heard the hissing.
He dropped to his knees, covered his face. The sound vanished.
He opened his eyes slowly, scanning the ground. The hiss returned. He shut his eyes again. Silence.
He crawled forward, eyes half-closed, barely open for a second at a time, knees scraping against the forest floor. Until he bumped into something.
A body. Or rather, half of one. Just the upper half, the rest... gone.
He reached out and touched fabric, soft and thick.
A cloak. An invisibility cloak. But it didn't cover the face.
Realization struck: the hissing, whatever it was, couldn't harm him if it couldn't see his eyes.
With trembling fingers, Oliver wrapped the cloak around himself. And for the first time that night, he allowed a sliver of hope. Darla might be getting better after all.

Won 1st place at the Woven Whimsy, Creative Writing Competition held by Mitrakshar, the English Literary Society.

Can Sisyphus be helped?

Kavya Chauhan, B.A. (H) English, II YEAR

Commissioned by The Solomon R. Guggenheim Museum, an art museum in New York City, Can't Help Myself was a kinetic sculpture created by Sun Yuan and Peng Yu in 2016. Sun Yuan and Peng Yu have been working together since the 1990s and are known for their unconventional art. Can't Help Myself is one of their popular artworks whose videos keep resurfacing on social media sites occasionally, even after almost a decade of its creation. Yuan and Yu, known for their controversial art accompanied by dark humor, use technology and multimedia art to create masterpieces that speak to people and express their critical views on socio-political issues like democracy, freedom, sovereign territory, and nation-state.

The creators of this kinetic art wanted to depict the pain of the immigrants whose government wants to tie them down under an authoritarian regime, preventing them from escaping by subjecting the immigrants to violence at the borders. The robotic arm, thus, represents an autocratic government that can go to the extent of enabling bloodshed at the borders of its country to keep its citizens from fleeing.

Can't Help Myself programmed with more than 30 movements and employed to one task, i.e., to sweep the hydraulic liquid which constantly leaks from its core back towards it, elicited responses from the audience which were psychological and emotional, because it allowed people to come up with their own interpretations. In the process of attempting to prevent the red liquid from spreading far from it, the robot still left traces of it everywhere. Apart from trying to push the fluid back to the center, the robot was also programmed with movements (happy dances) that could entertain the spectators whenever it completed its sole task. In its initial years, the robot was able to sweep the liquid quickly back to the center, which was followed by its happy dance, only for the liquid to flow everywhere again, and the cycle would go on. However, as time passed, the worn-down machine lost its ability to carry out the task as quickly as it used to. Not to mention, more hydraulic fluid would be added furthering the task of becoming unmanageable for the machine.

Whenever the videos of the kinetic masterpiece went viral online, commenters sympathized with the machine hoping for the day it'd be "turned off" and left to "rest", calling the task it had to carry as 'meaningless'. Yuan and Yu's masterpiece, which would be observed from behind the clear acrylic glass that separated their kinetic sculpture from its spectators, was unplugged in 2019 as it came to a halt, meaning that it had become free from the Sisyphean task. According to Greek Mythology, Sisyphus was a king whom the gods punished; His punishment was to push a colossal boulder uphill, only for it to fall down, forcing Sisyphus to carry out the task all over again, making it a relentless cycle. A Sisyphean task, hence, refers to a task which can never be completed.

The robotic arm programmed to carry out a single task while entertaining its spectators until the day it's shut down due to its inability to carry out the sole task it was created for, is obviously going to be showered with sympathy by them. Why? Because the people see themselves in it. People who are displeased with the life they are living often question their existence, the meaning of their existence, and whether it really is worth all the labor only to die one day without being able to reap the benefits of the hard work they did their whole life. Not to mention, putting up a façade (and not happy dancing unlike the robotic arm) in front of people who constantly check up on them. If not family or friends, then the government monitors them wherever they go, and whatever they do, understandably wearing someone down as he/she ages. Just like Can't Help Myself, that had to carry one single task till its death, a multitude of people end up living a life which remains unchanging and monotonous till the day they die. This is one of the reasons I believe why so many resonated with Can't Help Myself: People can't help themselves from succumbing to this way of living a life that remains tedious till the end, because it seems like an impossible task to get out of one's own misery, let alone help someone else, making life seem like a Sisyphean task. Since the creators of Can't Help Myself used machine and technology to allow their anthropomorphic artwork to function without their presence,

I am compelled to construct an interpretation of the artwork while confronting an issue that technology poses in front of us: While technology does make things easier for a government to reach out to its people, it also makes it easier for it to keep a check on its people. And sometimes, instead of being critical of the political system people are subjected to, many subject their political leaders to idolatry. In the process, many citizens begin to check on their fellow citizens instead of empathizing with them, thinking that it will help society to flourish.

Can't Help Myself's robotic arm thus represents technology and several other ways of surveillance that help a government to contain and control its citizens in a system. The water may be a symbol of the citizens who, swept up by the practice of idolizing their political leaders, justify the violent actions of their government at times. Amidst these scenarios, such citizens may act as the agents of their political leaders and monitor their fellow citizens to keep them in check – all the while dismissing the problems the political system imposes on them. In this way, we may become the Sisyphus who loyally carry out the task assigned to us, while the God we idolize and bring to power, punishes us for our actions by disrupting the harmony of a state, making it seem as if there really is a need for a political system to do what it does. The Sisyphean task in this case becomes ensuring that the state flourishes, which can never really happen. Despite our best attempts, the political system will never cease to exist.
With the growing dependence of people on machines and technology, and several governments in the world weaponizing both whilst becoming even more controlling, can Sisyphus be helped?

>>>><<<<

The Fleeting Pests
Divyansha Batra, B.A. Programme, III Year

Stepping out in a park of the past in peak days of springtime with beaming rays of the sun atop is a recipe for a mixed cuisine – half annoyance and half nostalgia. There is also a little bit of guilt sprinkled in – being annoyed, knowing damn well you were the annoyer and not the annoyee not long ago.
There are fights about taking turns on the swing. The batsman is in denial about being bowled out of the game and his vain attempts to negotiate a second chance fail. There is a football lunged at a balcony at a velocity that breaks the grumpy lady's flowerpot, and her yelling and screaming contributes significantly to my witnessing of the chaos. There are children getting dirt and mud on their clothes without a care in the world. Their sports gear is a thing of the present and not ancient forgotten memorabilia of who they used to be. They know how to make the best of their days because they understand the limited-time-only nature of the '5 more minutes' they eloquently bargained for from their parents. Five more minutes of fun, of chaos, of commotion.

Five more minutes of love and of friendship.
They don't know this yet, but the five minutes will fly by so quickly that by the end of 299th second of it, they will be the person on the bench witnessing another set of trouble-makers bargain for their five more minutes. Five minutes that they will make the most of, despite the ticking clock. Love is most felt when it leaves and time is most felt when it has passed – and yet the juvenile attempt of freezing or delaying the passage of time for their '5 more minutes' is ignored and taken for granted by us grownups, when it should be inspirational. My annoyance lessens. I don't taste as many notes of it as I did when I first sat down.
I do wonder about an alternative place with silence and quiet. The swings are empty and full of cobwebs. The net behind the goal is clean and shiny. The ground is vacant of fun and sees more walkers, runners, and joggers. The flowerpot in the grumpy lady's balcony is intact and unnoticed with wilted flowers. She has no reason to water or replace them.
There is no noise. There is no peace either. This silence is unsettling.
The dirt and mud on the children's clothes have been replaced with logos of expensive brands. Friends have been replaced by a large number of Instagram followers. Being influenced into ice creams, unnerving hiding places for hide and seek, staying for five more minutes is overtaken by the influence of being defined by what you wear, how much it costs, and the 'aesthetic' value of everything you do. The innocence and whimsy have been displaced by high-end fashion and a lifestyle shaped by brands and price tags.
I detect a sense of worry and loss.
I'm jolted back in the present with a ball hitting my bench. Its owner can play my younger self in a movie. She asks for it back with a curious apology in her eyes.
My annoyance fades. There is only nostalgia with a side of gratitude.
I smile and give it back, watching her and her wolfpack return to their frenzies. Their clothes are mudded, and while it may not be a particularly flattering aesthetic, it is soulful.

Won 2nd position in Inter College Creative Writing Competition held at Lehren 2025.

Srishti Singh, B.A. Programme, I Year

हिंदी

निज भाषा उन्नति अहै,
सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा-ज्ञान के
मिटत न हिय को सूल।
अंग्रेजी पढ़ी के जदपि,
सब गुन होत प्रवीन
पै निज भाषा-ज्ञान बिन,
रहत हीन के हीन।...

संपादकीय

पृथ्वी के आरंभ से ही, सृजन इसका मूल तत्व रहा है। पहले मानवों का सृजन हुआ, फिर मानवों ने साहित्य का सृजन किया और अब मशीनों का। मनुष्य प्रगति के पथ पर अग्रसर है। यह उसकी सृजनात्मकता का ही प्रभाव है कि विकास के पथ पर वह आगे बढ़ता जा रहा है। मानव ने अपनी सुविधा के लिये मशीनों का निर्माण किया। जिससे उसे सुविधा तो हुई किंतु कई हानियों व मुश्किलों का भी सामना करना पड़ा।

"सृजन की शक्ति होती है, विध्वंस से बड़ी आशा और उम्मीदों से भरी ।"

मानव द्वारा किया गया कोई सृजन विध्वंसकारी नहीं होना चाहिये। सृजन सदैव मानवता, खुशहाली व बेहतर भविष्य के लिये होता आया है। वर्तमान में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस या कृत्रिम बुद्धिमता का प्रयोग कई क्षेत्रों में किया जा रहा है। इसका प्रयोग हमें अपने विकास के लिये करना चाहिये न कि इसका दुरुपयोग करना चाहिये।

सृजनात्मकता का उद्देश्य समाज को बेहतर बनाना होता है। मानव द्वारा रचित साहित्य का भी यही उद्देश्य होना चाहिये कि वह यथार्थ को दर्शाये और हमें प्रेरित करे। कालिंदी महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका प्रवाह 2025 का केन्द्रीय विषय है, सृजन - मशीन, मनुष्य और साहित्य। इस अंक का सम्पादन करते हुए हमें अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। सर्वप्रथम हम हमारी प्राचार्या जी का धन्यवाद प्रकट करते हैं जिन्होंने हमें पत्रिका संपादन का अवसर प्रदान किया। इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के संग्रह से लेकर संपादन तक में डॉ रक्षा गीता , डॉ संजय सर एवं सुश्री पल्लवी मैडम का हम हृदय से आभार प्रकट करते हैं जिनके मार्गदर्शन में यह कार्य संभव हो पाया। साथ ही अपने गुरुजनों के मार्गदर्शन में प्रवाह 2025 का अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

सृजन ही हमारी प्रकृति है। इसी भाव को प्रकट करते हुए सभी छात्राओं ने अपने-अपने विचारों को कलमबद्ध किया है। प्रवाह में प्रकाशित सभी नवोदित रचनाकारों को मैं शुभकामनाएं देते हुए उनकी कलम के गतिमान होने की प्रार्थना करती हूं।

छात्र संपादक
मुस्कान कुमारी, मानसी गुप्ता, अनुष्का खंण्डूरी, निधि, संध्या, मनीषा कुमारी, संजना.वंशिका कहलुरिया

विषय सूची

1. ऐ नारी	शिवांगी प्रधान
2. तू ज़ब मिलने आएगा	नेहा यादव
3. सृजन मशीन, मनुष्य और साहित्य	प्रिया सोमवंशी
4. पांचाली	मानसी गुप्ता
5. मां - मेरे दिल की बात	संजना
6. पहली मुलाक़ात	मुस्कान कुमारी
7. जंजीर	समृद्धि सिंह
8. अनुदित कविता	विनीता भारती
9. दिल्ली की गर्मी और बस: ड्राइवर की दुविधा	संध्या
10. मां बाप का अनमोल प्यार	मनीषा कुमारी
11. कॉलेज का पहला दिन	वंशिका कहलुरिया
12. सोशल मीडिया कि उपयोगिता और चुनौतियाँ	मानसी गुप्ता
13.आर्टिफिशल इंटेलीजेंस और रचनात्मक लेखन की चुनौतियाँ	ख़ुशी भाटी
14.सूरज	सुप्रिया झा
15. फ़िल्म समीक्षा - जोराम	सृष्टि रॉय
16. वी आर वर्किंग वुमन	डॉ वर्षा
17. 1. विदाई 2. उत्सव	डॉ कुमारी शोभा

ऐ नारी !

लड़की हो तुम, कमजोर नहीं,
नारी हो तुम, अबला नहीं ।
आदिशक्ति का रूप हो तुम,
ईश्वर की एक अद्भुत रचना हो तुम।
संसार की एक ऐसी पहेली हो तुम,
क्जसे न विधाता समझ सका न ये इंसान ।
गींगा-सी निर्मल हो तुम, यमुना-सी पावन हो तुम ।
कभी कल्याणकारी हो तुम, तो कभी विनाशकारी हो तमु ।
कभी दुर्गा बनकर, किया दुष्टों का संहार तुमने ,
कभी मदर टेरेसा बनकर, विश्व मे अमन,शांति और प्रेम किया प्रसार तुमने ।

कभी रानी पद्ममनी बनकर अपनी मान सम्मान के रक्षा हेतु किया तुमने जोहर,
तो कभी लक्षमीबाई बनकर किया अंग्रेजों का विनाश तुमने,लड़ी लड़ाई स्वतंत्रता की ।
कितने रूप है तुम्हारे जिसने अनजान यह दुनिया
कितने स्वरूप है तुम्हारे ।
तुम्हें समझ पाना मुश्किल ही नहीं बल्कि नामुमकिन- सा है।
ये दुनिया रूबरू नहीं है तुमसे ।
जिसकी ताकत से ही अनजान ये दुनिया
सोचो कितनी शक्तिशाली होगी वो ।
ऐ नारी ,तुम कमजोर नहीं, बल्कि ताकत हो तमु ।ए नारी तुम अबला नहीं, बल्कि शक्ति हो तुम।

शिवांगी प्रधान (बी०ए० द्वितीय वर्ष

तू जब मिलने आएगा

तू जब मिलने आएगा,
तब चांदनी रातों का आशियाना होगा
चाँद हमारे मिलने की ग्वाई दे रहा होगा,
हवाओं में मेरे दिल का हाल होगा,
खामोशियों को तू समझ नहीं पाया,
क्या प्यार जताने के लिए इजहार करना जरूरी होगा?

मुझसे दूर रहने का दर्द तुझे भी सता रहा होगा,
माना कम ही सही पर तन्हा थोड़ा तू भी होगा,
अब मिलने के बाद एक दूजे के बिना एक पल न गंवारा होगा,
अपनी इस गुस्ताखी के लिए माफ़ी भी तू मांग रहा होगा
फिर सज़ा-ए-इश्क मेरे दिल में तेरा हमेशा के लिए केद होना होगा

नेहा यादव

सृजन : मशीन, मनुष्य और साहित्य!!

सृजन ! क्या है ये भला?
न जानो तो बस एक शब्द
जान लो तो गहरा अर्थ है छिपा
कि कभी ये है उसमें तो कभी वो
खुद एक कला
कभी विचारों के पिटारो से लड़ियों सा
झरा, तो कभी बादलों से धुंधले पन्नों
पर रोशनी से कुछ लिखा
ये मन की उधेड़बुन का है सुलझा
सा सिला क्या यहीं किताबखानों में
किताबों सा मिला?
जब लिखने की कला को साधा तो
साहित्य सृजन्ता से जुड़ा कभी
कल्पना तो कभी वास्तविकता
कभी कल्पना तो कभी वास्तविकता
मगर साहित्य समाज का दर्पण बना
सैकड़ों कृतियों से मानव को जीवन
बेहतर समझने को मिला
जिसे मशीनों के साथ आगे बढ़ने का
मौका मिला
बदले साल और फिर हुए तकनीकी
कमाल जब आए मानव के भाव
विचारों में मशीनी प्रकार
जहाँ व्यक्त करने के तरीके हुए
आसान
वहीं इसके रूप न बदल दी थी पहचान
तो फिर बदल गए हैं कीर्तिमान
सृजनता की परिभाषा का मानव
आईना है बना
सृजन का इससे बड़ा प्रमाण है क्या
भला?

प्रिया सोमवंशी

पांचाली

सुनो प्रिय पांचाली मेरी एक पुकार।
यह कलयुग है, यहां मिलेंगे तुम्हें दुशासन
कई हजार ।
यह कलयुग है ,नहीं आएंगे कृष्ण तुम्हारी
लाज बचाने को ।
संघर्ष स्वयं करना होगा इन दानवों को
सबक सिखाने को ।
समझ नहीं आता यह कैसी आजादी है,
जहां आजाद विचार हैं ,अदृश्य गुलामी में
नारी है। सशक्त - सशक्त का जप करते
हो और कितना सशक्त हो जाए हम। चांद
पर तो पहुंच चुके हैं ,अब क्या सूरज की
लपटों में मिल जाए हम। तुम्हें बचा ने
उस पद पर गए थे । पर तुम्ही ने रौंद
डाला ।
हाय समाज ! दया ही देना , कभी न्याय
मत दे पाना तुम ।
औरों से क्या आशा हो जब स्वयं की
कर्मभूमि ही मैली हो ।
जहां न्याय के बदले सिर्फ विरोध और रैली
हो ।
न्याय से भी क्या उम्मीद करें एक के लिए
11 साल लगते हैं,
और कानून कड़े कर देने से स्त्री सुरक्षित
नहीं हो जाती है।
सजा देकर भी क्या ही कर लोगे तुम,
ये रक्तबीज हैं एक मारने पर सौ आ जाते
हैं ।
समाज की नैतिकता तो शायद कब्रिस्तान
में मुर्दा गढ़ी है।
तभी पीड़िता होने के बाद भी वह कटघरे
में खड़ी है,
हे! नारी तुम सिंहनी बनो । जो आए
तुम्हारी लेने आन,
चीरफाड़ कर वध उसका , बचा लो स्वयं
अपना मान।
यह कलयुग है, यहां केश धोने को तुम्हारे,
रक्त नहीं कोई लायेगा ।
मिसाल विश्व में कायम कर दो , जो
आंख उठायेगा वह मृत्युलोक को जाएगा।
न्याय संहिता तुम्हें न्याय, घटना होने के
बाद ही दे पाएगी ।
ऐसी मौत दो उनको कि हर आरोपी को
स्वप्न में मां काली ही नजर आएंगी।
खौफ इतना हो मन में कि अपने विचार
नियंत्रित कर लें।
साहस इतना हो तुम में की कृष्ण को
आना नहीं पड़े तुम्हें बचा ने।

मानसी गुप्ता, हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

माँ - मेरे दिल की बात

माँ, तू हमेशा मेरे पीछे खड़ी रही, जब मैं
गिरी तूने बिना बोले उठा लिया, कभी कुछ माँगा नहीं, बस मेरी आँखों में ख़ुशी ढूंढती रही।

तेरे हाथ की रोटी में जो स्वाद है, वो किसी होटल की थाली में नहीं, तेरी गोद में जो सुकून है, वो दुनिया की किसी दौलत में नहीं।

मैं अक्सर उलझी रही अपनी दुनिया में, पर तू हर रोज़ मेरे बारे में सोचती रही, मैंने कभी "थैंक यू" ठीक से नहीं कहा, पर तू हर दिन मेरा शुक्रिया करती रही।

तेरी झुर्रियों में मेरी परवाह छुपी है, तेरी चुप्पी में ढेर सारा प्यार है, माँ, तू बस माँ नहीं, तू मेरी सबसे बड़ी ताक़त है... मेरा घर है।

संजना, हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

पहली मुलाक़ात

मैं हर बार तुमसे पहली बार की तरह मिलना चाहती हूँ!तुम्हारे कंधे पर अपना सर अपने हाथों में तुम्हारा हाथ रखना चाहती हूँ!!
मैं फिर तुमसे पहली बार की तरह मिलना चाहती हूँ.

मैं दिल खोल के तुमसे बातें करना चाहती हूं ! मैं तारे गिनते हुए तुम्हारे साथ एक शाम गुजारना चाहती हूँ!! मैं तुम्हारे पसंद नापसंद चीज़ों के बारे में पूछना चाहती हूँ ! मैं फिर से तुम्हारे साथ जीना चाहती हूं!! मैं फिर एक
बार तुमसे पहली बार की तरह मिलना चाहती हूँ....

मैं ये सारी बातें खुद से बोलती हूं, मैं अब तुमसे बोलना चाहती हूं ! मैं फिर से तुम्हें रोकना चाहती हूं !! मैं तुमसे सपनों में मिलती हूं, अब मैं तुमसे हकीकत में मिलना चाहती हूं!! मैं तुम्हें बस इतना कहना चाहती हूं.....कि मैं तुमसे पहली बार की तरह मिलना चाहती हूं!!

मुस्कान कुमारी

जंजीर

कि जिस कदर दिल भर जाने पर आंसू
बाहर आते हैं,
बाहर आते हैं शब्द जब मन भर जाता
है,
मन भर जाता है इस दुनिया से, लोगो
की बातों से, समाज के नियमों से और
कभी खुद से,
खुद से कुछ कहना चाहती हू - लोगो
को कुछ बताना चाहती हूँ,
बताना चाहती हूँ कि क्या फ़ायदा
इतना सब सोच कर,
इतना सब सोच कर लगता है और
कितना सोचू,
और कितना सोचू उनके बारे में जो मेरे
लिए कुछ नहीं सोचते,
कुछ नहीं सोचते वो चार लोग, ये
समाज या बाकी के रिश्तेदार ये तो सब
बातें हैं,
बातें हैं जो हमें बताई गई हैं-हमने मान
ली हैं,
मान ली है बिना ये जाने की सच है या
झूठ,
सच है या झूठ पता चलता ही नहीं
यहाँ,
पता चलता ही नहीं कुछ यहाँ,
कुछ यहाँ सही नहीं-यहाँ तो मैं भी
गलत हूँ,
गलत हूँ इनके लिए चाहे सच में सही
हूँ,
सही हूं मैं क्योंकि नहीं चलना मुझे
इनके हिसाब से,
इनके हिसाब से सब चीज़ क्यू,
सब चीज़ क्यू मानू मैं,
क्यू मानू मैं जो मैं मनना नहीं
चाहती,
नहीं चाहती मैं अब और घुट के
जीना, बंध के जीना, मर के जीना,
मर के जीना भी क्या जीना,
क्या जीना ऐसे जैसा मैं ना चाहू,
मैं ना चाहू अब या हां-हां करना,
हाँ करना उन कामों,उन बातों के
लिए जिसमें मेरी सिर्फ ना है,
ना है मेरी अब इस गुलामी के जीवन
को अब मैं आज़ाद हूँ,
आज़ाद हू अब माई सारे बंधनो से,
बंधनो से जिन्हे मैंने तोड़ दिया है!!

समृद्धि सिंह
बी ० ए प्रोग्राम प्रथम वर्ष

>>><<<

अनुदित कविता (भोजपुरी)माता प्रसाद द्वारा रचित भोजपुरी कविता "सोनवा का पिंजरा" कविता मुसहर जाति पर है कवि माता प्रसाद जी उनके जीवन में संघर्ष के उनकी दयनीय स्थिति को प्रकट करती है कि किस प्रकार दलितों पर शोषण व अत्याचार किये गए।

नाम ही मेरे मुसहरवा हों
मैं मुसहर जाति से हूँ
सहारा कोई न,न नाम कोई
क्योंकि मैं जो हूँ मुसहरवा
जेठ के महीने में
कड़कती तपती दुपहरिया
हो,
बहें गरम लू का ब्यार
लकडियां चिराई करें
बहे जाये पसीनवा की धार !
क्योंकि मैं जो हूँ मुसहरवा ...
बाँधे कांधे पै लकड़ियां
घर घर जाता हूँ
माँगू दाम आधे
दुत्कार दिया जाता हूँ
क्योंकि मैं जो हूँ मुसहरवा ..
जोतने को जमीन कहाँ ?
रहने को नहीं घर यहां
माँग भी ली जो थोड़ी
जमीन
निकाल करेंगे बाहर
क्योंकि मैं जो हूँ
मुसहरवा ....
टूटी-फूटी झोपड़ी-सी
है घर के नाम पर
सासू, बहु संग सोवे

क्योंकि मैं जो हूँ मुसहरवा.... .
मेंढक सांप, गोह मूस खाय
करें शिकार गिलहरियां का
इस पापी पेट खातिर
कुत्तों से लड़ाई करें
दिखे जो झूठे पत्तलवा
क्योंकि मैं जो हूँ मुसहरवा....
ठंड में भी कपड़ों के नाम पर
फटा हुआ टुकड़ा आधार
आग जलाकर कुछ
मिले है आराम, पर
सुनेगा कौन मेरी पुकार
नहीं है किसी से कोई दरकार
क्योंकि मैं जो हूँ मुसहरवा....
ढाक के जंगल बचे कहाँ
कैसे बनाएं पत्तल बेचे कहाँ
दूल्हे दुल्हन के हम हीरे कहार
मोटर कार ने छीनी रोजी हमार
क्योंकि मैं जो हूँ मुसहरवा....
घर से उठाकर मारे थानेदार
झूठे झूठे बनाए हमें गुनहगार
उठवाते है मलवा जेल में
सुनेगा कौन हमारी गुहार
क्योंकि मैं जो हूँ मुसहरवा..
आजाद देश में हम आज भी गुलाम,
कहां सुनवाई हमरी, न हमारी सरकार यहां
'मितरो' कोई तो जुगाड़ करो,
करो कोई हमरा भी उद्धार

विनीता भारती हिन्दी विशेष

दिल्ली की गर्मी और बस ड्राइवर की दुविधा

अप्रैल की झुलसाती दोपहर, जब दिल्ली की सड़कों पर धूप ऐसे बरसती है मानो सूरज खुद धरती पर उतर आया हो। चप्पलें पिघलने लगती हैं, लेकिन सिर्फ बाहर खड़े होने से ही नहीं — बस में खड़े होने पर भी चप्पलें तक पिघलने लगती हैं, क्योंकि नीचे की फर्श इतनी तप रही होती है जैसे अंगारे बिछे हों। बस स्टॉप पर खड़े लोग छांव की एक किरण के लिए तरसते हैं।
ऐसे में दिल्ली परिवहन निगम(DTC) की एक भरी हुई बस स्टॉप पर पहुँचती है। भीतर पहले से ही भीड़ है — पसीने, बदबू और बेचैनी से भरी।
ड्राइवर के माथे पर पसीना है, पर वह नियम से बंधा है — "जहाँ स्टैंड न हो, वहाँ दरवाज़ा न खुले।"
लेकिन सामने बूढ़ा आदमी, पीछे स्कूल से लौटती बच्चियाँ, और कोने में एक महिला अपने बच्चे को संभालते हुए बस का इंतज़ार कर रही है।
लाल बत्ती पर बूढ़े आदमी ने इशारा किया — "भाई, यहीं से चढ़ा ले!"
ड्राइवर ने नियम का पालन करते हुए दरवाज़ा नहीं खोला — तो गालियाँ मिलती हैं।
अगर कभी भावुक होकर दरवाज़ा खोल भी दे, तो "धन्यवाद" तक नहीं कहते।
कभी-कभी कोई शुक्रगुज़ार हो भी जाए, फिर भी अगला मुसाफ़िर उसे ही नियम तोड़ने वाला कहेगा — ग़लत ही बोलेगा। और चालान कटने का डर वो अलग से हैड्राइवर के सामने दुविधा है — नियम का पालन करे या इंसानियत का?

पीछे से कंडक्टर चिल्लाता है, "दरवाज़ा मत खोलना भाई, कैमरे लगे हैं!"
भीड़ धक्का देती है, कुछ गालियाँ देती है, पर ड्राइवर बस चलाता है — मन में भारी बोझ लिए।

दिल्ली की गर्मी में सिर्फ शरीर और चप्पल ही नहीं पिघलाते कभी-कभी संवेदनाएं भी पिघल जाती हैं।

संध्या
हिंदी विशेष
द्वितीय वर्ष

माँ-बाप का अनमोल प्यार

माँ की ममता, अमृत जैसी,
पिता की छाया, बरगद जैसी।
दोनों की दुआओं का साया,
बना रहा हर मुश्किल आया।

माँ के बिना घर सूना-सूना,
पिता के बिना लगे अधूरा।
ये वो रौशनी का दीपक हैं,
जो हर ग़म में जलते रहते हैं।

माँ की गोदी, पहला बिछौना,
पिता की उँगली, पहला सहारा।
इनके बिना कुछ भी अधूरा,
इनके बिना सपना भी अधूरा।

त्याग की मूरत, स्नेह के सागर,
हमारे जीवन के असली रहबर।
इनकी खुशियों में है जहाँ हमारा,
माँ-बाप से प्यारा कुछ भी नहीं दुबारा।

मनीषा कुमारी, हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

कॉलेज का पहला दिन

नए सपने, नई उमंग,
दिल में बस एक नई तरंग।
कॉलेज का पहला दिन आया,
मन में उत्साह, चेहरा मुस्काया।

बैग में किताबें, आँखों में आस,
नए दोस्त, नई होगी बात।
अनजाने चेहरे, नई पहचान,
दिल में धड़कन, मन में अरमान।

सीनियर्स की हल्की मुस्कान,
कुछ डर, कुछ अभिमान।

क्लासरूम की पहली घड़ी,
सपनों की नई चली लड़ी।

शिक्षकों के संग ज्ञान की बातें,
कभी पढ़ाई, कभी सौगातें।
कैंटीन में गूँजती हंसी,
दोस्ती की पहली खुशी।

याद रहेगा यह पहला दिन,
जैसे कोई मीठा सुमन।
एक नई राह, एक नई मंज़िल,
कॉलेज के दिन, जीवन के क़ीमती पल

वंशिका कहलुरिया हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

सोशल मीडिया की उपयोगिता और चुनौतियां

सोशल मीडिया से तात्पर्य

'सामाजिक संजाल स्थल' (social networking sites) आज के इंटरनेट का एक अभिन्न अंग है जो
दुनिया में एक अरब से अधिक लोगों द्वारा उपयोग किया जाता है। यह एक ऑनलाइन मंच है जो उपयोगकर्ता को एक सार्वजनिक प्रोफाइल बनाने एवं वेबसाइट पर अन्य उपयोगकर्ताओं के साथ सहभागिता करने की अनुमति देता है। प्रोफाइल का उपयोग अपने विचारों को साझा करने, पहचान के लोगों या अजनबियों से बात करने में किया जाता है। उदाहरण - फेसबुक, ट्विटर आदि इस संपूर्ण प्रक्रिया में वेबसाइट पर उपलब्ध उपयोगकर्ता की निजी सूचनाएँ भी साझा हो जाती हैं। यह पूरी प्रक्रिया सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित होती है, जहाँ विभिन्न प्रकार के सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जाता है। उपयोग के बहु-विविध तरीके और तकनीकी निर्भरता ने 'सामाजिक संजाल स्थल' को विभिन्न प्रकार के ख़तरों के प्रति सचेत किया है।

<u>सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव</u>

सोशल मीडिया दुनिया भर के लोगों से जुड़ने का एक महत्त्वपूर्ण साधन है और इसने विश्व में संचार को नया आयाम दिया है। सोशल मीडिया उन लोगों की आवाज़ बन सकता है जो समाज की मुख्य धारा से अलग हैं और जिनकी आवाज़ को दबाया जाता रहा है।
वर्तमान में सोशल मीडिया कई व्यवसायियों के लिये व्यवसाय के एक अच्छे साधन के रूप में कार्य कर रहा है। सोशल मीडिया के साथ ही कई प्रकार के रोज़गार भी पैदा हुए हैं।वर्तमान आम नागरिकों के बीच जागरूकता फैलाने के लिये सोशल मीडिया का प्रयोग का व्यापक स्तर पर किया जा रहा है। कई शोधों में सामने आया है कि दुनिया भर में अधिकांश लोग रोज़मर्रा की सूचनाएँ सोशल मीडिया के माध्यम से ही प्राप्त करते हैं।

<u>सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव</u>

कई शोध बताते हैं कि यदि कोई सोशल मीडिया का आवश्यकता से अधिक प्रयोग किया जाए तो वह हमारे
मस्तिष्क को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है और हमे डिप्रेशन की ओर ले जा सकता है। सोशल मीडिया साइबर-बुलिंग को बढ़ावा देता है। यह फेक न्यूज़ और हेट स्पीच फैला ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।सोशल मीडिया पर गोपनीयता की कमी होती है और कई बार आपका निजी डेटा चोरी होने का खतरा रहता है। साइबर अपराधों जैसे- हैकिंग और फिशिंग आदि का खतरा भी बढ़ जाता है।आजकल सोशल मीडिया के माध्यम से धोखा धड़ी का चलन भी काफी बढ़ गया है, ये लोग ऐसे सोशल मीडिया उपयोगकर्त्ता की तलाश करते हैं जिन्हें आसानी से फँसाया जा सकता है।सोशल मीडिया का अत्यधिक प्रयोग हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बड़े पैमाने पर प्रभावित कर सकता है।

<u>सोशल मीडिया और भारत</u>

सोशल मीडिया ने समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति को भी समाज की मुख्य धारा से जुड़ने और
खुलकर अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर दिया है। आँकड़ों के अनुसार, वर्तमान में भारत में तकरीबन 350 मिलियन सोशल मीडिया यूज़र हैं और अनुमान के मुताबिक, वर्ष 2023 तक यह संख्या लगभग 447 मि लि यन तक पहुँच गयी ।

वर्ष 2019 में जारी एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारतीय उपयोगकर्त्ता औसतन 2.4 घंटे सोशल मीडिया पर
बिताते हैं। इसी रिपोर्ट के मुताबिक फिलीपींस के उपयोगकर्त्ता सोशल मीडिया का सबसे अधिक (औसतन 4 घंटे) प्रयोग करते हैं, जबकि इस आधार पर जापान में सबसे कम (45 मि नट) सोशल मीडिया का प्रयोग होता
है।
इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया अपनी आलोचनाओं के कारण भी चर्चा में रहता है। दरअसल, सोशल
मीडिया की भूमि का सामाजिक समरसता को बिगाड़ने और सकारात्मक सोच की जगह समाज को बाँटने
वाली सोच को बढ़ावा देने वाली हो गई है।
सोशल मीडिया का दुरुपयोग

आँकड़ों के अनुसार, वर्ष 2018-19 में फेसबुक, ट्विटर समेत कई साइटों पर 3,245 आपत्ति जनक सामग्रियों के मिलने की शिकायत की गई थी जिनमें से जून 2019 तक 2,662 सामग्रियाँ हटा दी गईं थीं ।
उल्लेखनीय है कि इनमें ज़्यादातर वह सामग्री थी जो धार्मिक भावनाओं और राष्ट्रीय प्रतीकों के अपमान का
निषेध करने वाले कानूनों का उल्लंघन कर रही थी । इस अल्पावधि में बड़ी संख्या में आपत्ति जनक सामग्री का पाया जाना यह दर्शाता है कि सोशल मीडिया का कितना ज़्यादा दुरुपयोग हो रहा है।

मानसी गुप्ता हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

दूसरी ओर सोशल मीडिया के ज़रिये ऐतिहासिक तथ्यों को भी तोड़-मरोड़ कर पेश किया जा रहा है। न केवल ऐतिहासिक घटनाओं को अलग रूप में पेश करने की कोशिश हो रही है बल्कि आज़ादी के सूत्रधार रहे नेताओं के बारे में भी गलत जानकारी बड़े स्तर पर साझा की जा रही है।

विश्व आर्थिक मंच की रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया में सोशल मीडिया के माध्यम से गलत सूचनाओं का प्रसार

कुछ प्रमुख उभरते जोखिमों में से एक है।

यकीनन यह न केवल देश की प्रगति में रुकावट है, बल्कि भविष्य में इसके खतरनाक परिणाम भी सामने

आ सकते हैं। अतः आवश्यक है कि देश की सरकार को इस विषय पर गंभीरता से विचार करते हुए इसे पूरी

तरह रोकने का प्रयास करना चाहिये।

सोशल मीडिया और फेक न्यूज़ संबंधी नियम-कानून

भारत में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पहले से ही सूचना प्रौद्योगिकी (IT) अधिनियम, 2008 के दायरे में आते हैं।

<u>निष्कर्ष</u>

पिछले वर्ष भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान ग्वालियर के अध्ययन में बताया गया कि भ रत आनेवाले 89 फीसदी पर्यटक सोशल मीडिया के ज़रिये ही भारत के बारे में जानकारियाँ प्राप्त करते हैं। यहाँ तक कि इनमें से 18 फी सदी लोग तो भारत आने की योजना ही तब बनाते हैं जब सो शल मी डि या से प्राप्त सामग्री इनके मन में भारत की अच्छी तस्वीर पेश करती है।

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और रचनात्मक लेखन की चुनौती

"चुनौतियां बहुत सी सुनी होंगी तुमने, कभी आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का नाम सुना है ?" - बहुत बार सुना है। आजकल शायद दो चीजों पर सबसे ज्यादा बातें हो रही है - आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्या-क्या कर सकता है, दूसरा क्या क्या हम इसे करता नहीं देखना चाहते। आप यदि यह विषय न देते, तो शायद मुझे पता ही ना चलता कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अब रचनात्मक लेखन में किसी "चुनौती" का किरदार भी निभाना योग्य है। मुझे लगता था चुनौती केवल प्रेरणा की है कि लेखक किसी विषय पर कलम घुमाएं? और मुझे, एक कुएं की लेखिका को, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस डरा नहीं सकता, जिस प्रकार मेरे इंजीनियरिंग भाई-बहनों को डरा रखा है। यह लिखते वक्त मेरा पैर बादलों पर नहीं है, चूंकि कम से कम रचनात्मक लेखन में ये "ए.आई." बाधा बनता मुझे कई कारणों से नहीं दिखता। रचनात्मक लेखन क्या है ? कहानी, काव्य, आत्मकथा, जीवनी, आदि इसके भाग है, मूलरूप से आत्मअभिव्यक्ति रचनात्मक लेखन का सृजन करती है और लेखक पाठक को अपनी नजर से, अपने भावों की गाड़ी में बैठाकर दुनिया घुमाने ले चलता है। ए. आई. जीवित है क्या? क्या वह अपना निजी नजरिया रखता है? या आए दिन जीवन उसे नए-नए एहसास कराता है? नहीं, जो उसे बताया गया है शायद उसमें से वह आपको सबसे अच्छा, सबसे सही उत्तर देने का प्रयास करता है । यही उसकी दूसरी खामी उभर कर आती है- सही, गलत। लेखन में सही-गलत क्या होता है? मैंने हाथी को सूंड से पहचाना, आपने पूछ से, सही कौन, गलत कौन - सबके देखने-पहचानने का नजरिया ही तो है, और यही नजरिया एक ही घटना को उतनी तरह से देखने का अवसर प्रदान करता है जितनी लच्छा पराठा में परते होती हैं।

लेखन की खूबसूरती यही है। फिर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस गलतियों से भी बड़ा बचता है, और हमारे यहां

क्या कहते हैं- "इंसान से ही गलती होती है।" तो जब तक लेख मशीनों के लिए नहीं लिखा जा रहे, तब तक लिखने वाले व पढ़ने वाले दोनों की गलतियां माफ़। और अब शायद ए. आई. की सबसे बड़ी कमी- भाव की कमी। मैं जो लिखती हूं आप पढ़ कर मुस्कुराए, आंसू बहाएं, हामी भरे या बुरा मान जाए, भाव शामिल हैं। अक्सर लेख लिखने वाले के भाव पाठक तक पहुंचाने का कार्य करते हैं, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मानवीय भाव नहीं जानता। ऐसे में पाठक के पास सहानुभूति रखने के लिए कोई नहीं है। अब इतना लिखने के बाद सवाल आता है- तो क्या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का रचनात्मक लेखन पर या सामान्य रूप से लेखन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा? जवाब जलेबी की तरह सीधा है - तरीके बदलेंगे, इरादे नहीं। हो सकता है अखबार में ए.आई. लिखने लगे या उन जगहों पर इस्तेमाल किया जाए जहां भाषा की शैली नियमबद्ध होती है। किंतु रचनात्मक लेखन जहां लेखन शैली के नियम स्वयं बनाता है, वहां ए.आई. केवल एक सहायक के पद पर सकुशल अपनी सेवाएं प्रदान कर सकता है। मैं उसे बता दूं मेरी वर्तनी यह संभाल ले, शायद मुझे बेहतर शब्दों के सुझाव दे दे या व्याकरण संबंधी त्रुटियों से मेरे लेख को आजाद करने में मदद करें-बस यही तक है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस उपकरण है, जो मनुष्य के हाथ में है, सर पर नहीं। चाकू से टमाटर काटकर मैं रसम बनाऊंगी या खुद को चोट पहुंचाऊंगी, यह मेरे वश में है। ए.आई. मनुष्य की सहायता के लिए है, उसका स्थान लेने के लिए नहीं। उचित कुशल व नैतिक प्रयोग से हम सुनिश्चित कर सकते हैं कि आई चुनौती का भाग बनेगा या समाधान का। तो फिर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और रचनात्मक लेखन की चुनौतियां? जाइए, हम नहीं मानते।

खुशी भाटी

निबंध में तृतीय पुरस्कार बी.ए. पॉलिटिकल साइंस (आनर्स)

सूरज

सूरज सी चमक देखकर
आकर्षित बेबाक भागी मैं नंगे पाव
छाले पडे सहसा उछली
देखा दुख विलाप
कहता चमक देखकर आजातें सब
रहना दूर दरार
जला देते हैं मुझे, मेरे दुख के
राग
हाथ थामना जो आओगी
तो कोयल बन रह जाओगी

सहसा मैंने हाथ थामा
आसु आए गिर समेट
देखा पीठ पर कोड़े पड़े थे
भर लिए आंचल समेट कहती
मुस्कुराकर
आए हूँ हाथ थामने
साथ निभाओगे?

सारे गम जो ले लूं मैं
प्रस्ताव अपनाओगे

चमक आकर्षित कर रही
कब से जल रहे इस आग में

खारा सोना तो बन गए तुम
अब और कौन चाहिए साथ में

एकाएक हाथ पकड़ कर
देखता मेरे छालो को
देखता कुछ इस कदर

कुछ सोच रहा हो वो
बताने को .....
मेरे पास नहीं कुछ
तुम्हें देने या दिलाने को
सिवाय मेरे अग्नि को
रखने को निभाने को.....

- सुप्रिया झा हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

फ़िल्म समीक्षा - जोराम

जोराम 1 फरवरी 2023 को हिंदी सिनेमाघरों में आया। ये आदिवासियों के जीवन और जीविका को बहुत नजदीक से दिखाता है। यह फिल्म सुध्यतः सारखण्ड के दसक आदिवासियों पर आधारित है। किन्त्य तरह से इस प्रकार समाज में इनसानियत विलुप्त रह जा रही है। है। बेगुनाहों बेगुनाहों और कमप्तीर लोग इनका शिकार बनते हैं। लेकिन, इन सब के बावजुद्ध कुध लोगों में इनसानियत की बीच है, मानवता अभी भी जीवित है। 'जोराम' फिल्म की समीक्षा करते हुए मुझे अदम गोंडवी जी की एक पंक्ति याद आ गई- 'कल की यह वाचाल थी, पर आज कैसी मौन है जानते हो इसकी खामोशी का कारण कौन है।

किसी तरह से एक हँसता-खेलता परिवार खत्म हो जाता है। जिंदगी दगी में खुश रहने की कोशिश करते हैं लेकिन उनकी इस कोशिश को भी खामोश कर दिया जाता है। आध्ये, अब आप को कहानी के बारे में बताते हैं-कहानी में आदिवासी दसरू जो एक नक्सली गैंग को छोड़कर अपने परिवार के साथ मुंबई आ जाता है, और वह मजदूरी करता है। लेकिन एक दिन उनपर हमला हो जाता है। दसरू की पत्नी वानो की जान चली जाती है और दसरू नन्ही-सी वोरम को लेकर भा जाता है। झारखंड की फूलो से बचने के लिए जिसके बेटे की मौत का जिम्मेदार दसरू था। दसहरू दुधमुंही बच्चीgnhको लेकर गोलियों से बचते हुए भाग रहा है।

हे भगवान! विश्वास नहीं होता है यह वही दसरू है जो गोलियों से खेलता था। फिल्म के अंत तक झसक संघर्ष करते रहता है। यह फिल्म देश के उस समय की एक जीवंत तस्वीर है, जिसमें विकास के नाम पर पर्यावरण को हो रहे नुकसान की बात करना भी गुनाह था। ये फिल्म हर उस इंसान के दिल को छू लेने वाली है, जिसने विकास की राजनीति को अपने गाँव, कस्बे और आस-पास महसूस किया है।

इस फिल्म में यह भी दिखाया गया कि आदिवासियों को अपनी जमीन कपनी को बेच देने के लिए उकसाते एक युवक को माओवादी सरेआम उल्टा लटकाकर उसकी चमड़ी को कीले डंडे से उधेड़ देते है। उस युवक की माँ माओ से बदला लेने निकलती है। दसरू भी इस पाटी में था। इस कोड के बाद वह शहर भागता है। लेकिन, उस युवक की माँ बदला लेने के लिए उसका पीछा करता हुई शहर तक आती है। एक माँ तो संवेदना की मूर्त थी, किस तरह से समाप्त ने उसे संवेदनहीन बना दिया था। इसके बाद फिल्म में दसरू बच्ची को लेकर भगते रहता है, उसके पीछे मुंबई के दरोगा के सिस्टम से तूझते रहने और देश में हुए विकास की सच्ची बीतती है। तस्वीर दिखाने में बीतती इस फिल्म का बिम्ब - वह लोहे की खदानों के बीच खड़ा विशालकाय वृक्ष है।, जिस पर माडवी को उल्टा लटकाया गया था। इसके साथ ही कहानी अपने अंत तक पहुंच जाती है। लेकिन दसरू की कहानी अभी खत्म नहीं हुई है, वह अब भी भाग रहा है। न जाने कितने ही सदियों से भाग रहे है।

सृष्टि रॉय हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

आँचल चौरसिया
तृतीय वर्ष
हिन्दी विशेष

अध्यापकीय पन्ना

वी आर वर्किंग वुमन

यह बोलना जितना प्राउड फील करवाता है उतना ही मायूसी भी दे जाता है
जहां यह इंडिपेंडेंट होने का एहसास दिलाता है वही सैक्रिफाइस की लिस्ट भी बनवाता है
वी आर वर्किंग वुमन जो सुबह उठकर दौड़ते हैं नहाने क्योंकि किचन एंट्री की वह है की
खाना बना फिर टिफिन रखते हैं और आनन फानन में खाकर चलते हैं
रात की नींद को किस्तों में मेट्रो में पूरी करने की कोशिश करते हैं
साथ वाला अगर बहुत खड़ूस हो तो हेड में ज्यादा सिर दर्द लिए उठते हैं
ड्यूटी पर फिर अपना हंड्रेड नहीं मेबी 80% ही करते हैं
क्योंकि बच्चे हुए 20 का 80 बनाकर शाम को घर में फिर मशक्कत करते हैं
रात में थकान से चूर फिर बिस्तर पर पड़ते हैं
सुबह उठकर फिर वही साइकिल चालू करते हैं

वी आर वर्किंग वुमन, सो हसबैंड के साथ टाइम भी कम स्पेंड करते हैं
कोई समझे ना समझे हस्बैंड समझेंगे ये उम्मीद लिए चलते हैं
यहां तक तो ठीक है लेकिन जब हम 2 से 3 बनते हैं
एक नया स्ट्रगल फॉलो करते हैं
मां बनना है एक सुखद एहसास सब बयां करते हैं
पर है यह एक जंग जो हम खुद से खुद के लिए लड़ते हैं
अब भी उम्मीद उन सब कामों की है
लेकिन बच्चे की जिम्मेदारी भी है
सुबह बच्चों को सोता हुआ छोड़कर आने की हिम्मत नहीं होती
और उठाकर फीड कर आए तो रोते हुए छोड़ने में जान है जाती
घर आते ही बच्चा मां को है चाहता
मां भी दिन की थकान भूल लेती है उसको उठा
अपने खुद की हरी बीमारी का ध्यान नहीं रखती वह मां है कुछ कह भी नहीं सकती
जब वह अपनी मां से पहले दूसरों को मां है कहता
तो उसके बोलने की खुशी में कहीं एक दर्द भी है छुपा
जब सुनती है कि तेरे जाने के बाद तुझे याद नहीं करती
फिर से वही खुशी और गम का परचम है छाता
जहां खुश है कि वो ज्यादा रोती नहीं होगी तो दुखी है मां उसके आस पास क्यों नहीं होती
वी आर वर्किंग वुमन, वी प्राउड टू बी इंडिपेंडेंट एंड वी आर इन सोरो फॉर नेगलेक्टिंग आर फैमिली

डॉ. वर्षा
असिस्टेंट प्रोफेसर
डिपार्टमेंट ऑफ फिजिक्स

प्रिया तिवारी हिन्दी विशेष तृतीय वर्ष

विदाई

शाखाओं में पहली बार
नहीं फूटी थी कोपलें
हाँ जरूर पहली बार
अनिश्चित विदाई दे रही थीं
हर एक डाली दूसरी डाली के पत्तियों को
मौसम ने बसंत को भी नही दी थी
कोई आहट ऐसे परिवर्तन का
विदाई मानो विदाई ना हो
वो राग हो जिसे कोई अपने कंठ में
कभी नही उतारना चाहेगा शिव बन कर
बल्कि कभी ना लौटने का मलाल
सृजन को धूमिल कर रहा हो
नए का उत्सव मनाना
शायद भूल गया हो बसंत
भूल गयी हो प्रकृति...
अभी अभी तो खिले थे फूल
अभी-अभी तो आये थे फल
एक-एक डालियों पर
ना फल गिरे ना पत्तियाँ ने कहा था
अलविदा....
एक रात अचानक मौसम ने
बदल लिया था नियम
सृजन की प्रक्रिया का
दूसरे दिन अकस्मात गर्म धारा के
प्रवाह ने बदल दिया हवा का रुख
झकझोर दिया अभी-अभी आये फलों को
तपती धूप की धारा इतनी निष्ठुर ना हुई
थी पहले कभी...
असमर्थ रहे होंगे शायद ये वृक्ष भी जो ना
रोक पाए ताप के वेग को
वो ना बढ़े, ना पके, ना परिपक्व हुए।
झड़ गए रातो रात
अगली सुबह कुछ भी सामान्य नहीं था
सामान्य था सिर्फ भोर होना
कोपलें फूटी मिली पेड़ो पर
बस

मन बेचैन था
नए उगे कोपलों को देख कर
रात भर उस जन्म देने की प्रक्रिया
पर
कितनी पीड़ा सही होगी वृक्ष ने
एक को विदा ना कर पाने की पीड़ा
तो
दूसरे नई कोपलों के फुटने की
पीड़ा

विचलित था हृदय आने और चले
जाने के
अटल नियम पर।
कितना कुछ छोड़ देती है प्रकृति
हमें महसूस करने को
रचने को, गढ़ने को, बढ़ने को
यही वेदना तो सृष्टि की देन है
रे मन! कर स्वीकार
ये जो बदला है वेग,जो बदली है
ताप
वो पहले से शायद निश्चित रहा
होगा
रहा होगा कोई अटल सिद्धांत
इसके परिवर्तन का।
चल अब भविष्य की कल्पनाओं में
चल

कल कोयल भी इसी पर कुहकेगी
पपीहा भी पिऊ-पिऊ बोलेगा
उड़ेगी तितली भुला कर दुखन
सारे
उतरेंगे जुगनू कल तेरे ही गोद में
बन के सितारे।।

सहायक आचार्य हिंदी विभाग
कुमारी शोभा

उत्सव

ये जो डूबे है सितारे
कल उगेंगे जमी पर
बन के ख्वाब के तिनके
डूबा है तो क्या हुआ
आसमान छूने से पहले
दबती है बांस की बीज भी
चुपचाप 5 सालों तक
उसे बोने वाला देता है पानी
बिना दिन जोड़े
इस उम्मीद में की एक दिन
उम्मीद के साहस जैसा ही
उगेगा उसका विश्वास
जीवन को तना समझ
भरेगा उसमे भावनाओं की नमी
उगेंगे सितारे एक दिन जमी से ही
उसदिन निहारेगा आसमान जमी को
उठायेगा अपने बराबर झुक कर नमी को

सहायक आचार्य हिंदी विभाग कुमारी शोभा

संस्कृतस्य अनुभागः

सम्पादकीयम्

सर्जनशीलता एका मानसिकी प्रक्रिया अस्ति, यस्मिन् नूतनाः विचाराः, समाधानाः, अवधारणाः वा जायन्ते यदा कस्यचित् कार्यस्य परिणामः उत्तमः भवति, तदा विशेषोपयोगी इति स्वीकृतः भवति तदा तत् कार्यं सर्जनात्मकं अस्ति इति उच्यते सर्जनशीलतायाः क्रमे अद्य मानवजातिः सफलतायाः ऊर्ध्वतां स्पृशति ।अस्माकं समर्पणस्य परिश्रमस्य च साहाय्येन अस्माभिः एतादृशानि यन्त्राणि आविष्कृतानि येषां साहाय्येन मासानां कार्यं दिवसेषु भवति एकदिनस्य कार्यं च एकस्यां होरायां सम्पद्यते न अधिकं श्रमिकाणां आवश्यक्ता अस्ति न च कालबाधा अस्ति । परं यन्त्रेषु अधिकावलम्बनं उचितं नास्ति । यदि तादृशं भवति, तर्हि मनुष्याणां स्वक्षमता क्षयं यास्यति। एकदा एषा स्थितिः भविष्यति, यस्यां मनुष्याः स्वत्वेन किमपि कर्तुं समर्थाः न भविष्यन्ति ।
यन्त्राणि मुख्यतः हितकार्यं कुर्वन्ति। परन्तु प्रत्येकवस्तुवत् तेषां हानिः लाभश्च स्तः।
साहित्यकाराः चेतनाशीलाः, संवेदनशीलाश्च भवन्ति तेषां दृष्टि- सामर्थ्यं भविष्यतिकाले' करिष्यमाणानां घटनानां प्रत्यक्षीकरणे पटुतरं भवति । ते लोकहिताय स्वसाहित्यमाध्यमेन जनान् प्रायशः सर्वदा उचिते मार्गे प्रवर्तनाय प्रेरयन्ति. मशीनीकरणमाध्यमेन जनानां कार्यराहित्यं जायते तेन ते निष्क्रियाः अतएव रुग्णाः दरिद्राश्च भवन्ति । एतेषां एतस्यां अवस्थाया इदं दायित्वं भवति यत् ते जनान् यन्त्राणाम् समुचितोपयोगं प्रति प्रेरयन्तः समाजस्य सर्वाङ्गीण- विकासाय सर्वदा प्रयतेरन् ।

शगुन: सिंह: (स्नातकद्वितीयवर्ष:),
अन्जलि: राजवंशी(स्नातकद्वितीयवर्ष:),
सभ्यता (स्नातकद्वितीयवर्ष:)

विषयानुक्रमणिका

क – मानवता (खुशी पाण्डेय: ,स्नातकतृतीयवर्ष:)
ख – संस्कृत साहित्ये नारी (नियति मिश्रा,स्नातकतृतीयवर्ष:)
ग – साहित्यम् एकं जीवनदर्शनम् (महकशर्मा, स्नातकतृतीयवर्ष:)
घ – पर्यावरणम् (वन्दना राय:, स्नातकतृतीयवर्ष:)
ङ – संस्कृतसाहित्ये पुनर्जन्मविषयकं चिन्तनम् (हर्षिता (स्नातकतृतीयवर्ष:)
च – संस्कृतसाहित्ये राष्ट्रिया एकता (ईशा बांगा (स्नातकतृतीयवर्ष:)
छ – मानवताया: अभिप्रायः (मुस्कान चौबे , स्नातकद्वितीयवर्ष:)
ज – यन्त्राणां महत्त्वम् (अंजली राजबंशी,स्नातकद्वितीयवर्ष:)
झ –यन्त्राधीनताया: युग: (आराधना राय:,स्नातकतृतीयवर्ष:

मानवता

मानवता इति शब्दः मानवस्य स्वभावस्य, गुणस्य च विशेषणं अस्ति। एषः शब्दः न केवलं मानवस्य जातिं सूचयति, किन्तु तस्य गुणानां, धर्माणां च समुच्चयम् अपि दर्शयति। मानवतायां सहानुभूतिः, करुणा, दया च इत्यादयः गुणाः समाहिताः सन्ति।

मानवता इति तस्य मूलाधारः अस्ति। यः मानवः स्वस्य सुखं, दुःखं च अनुभवति, सः अन्येषां जनानां दुःखं अपि अनुभवितुं समर्थः अस्ति। एषः गुणः मानवस्य सामाजिक जीवनस्य आधारभूतः अस्ति। यदि मानवः केवलं स्वस्य सुखं चिन्तयेत्, तर्हि सः मानवता इत्यस्मिन् गुणे वञ्चितः भविष्यति।

मानवता इति केवलं एकस्य व्यक्तिविशेषस्य गुणः न, किन्तु सम्पूर्ण- मानवजातिं एकत्रितं कर्तुं प्रेरयति। मानवता इति एकस्य समाजस्य, राष्ट्रस्य च एकत्वं प्रदर्शयति। यदा मानवाः एकस्मिन् सूत्रे बद्धा भवन्ति, तदा तेषां सहानुभूति, सहकार्य च वर्धते ।

वर्तमानकाले, मानवता इति विशेषतः आवश्यकं अस्ति। यदा विश्वे अनेकाः समस्याः, युद्धाः, दारिद्र्यं च विद्यमानं अस्ति, तदा मानवता इति गुणः अधिकं महत्वं प्राप्नोति ।

अतः, मानवता इति एकं महन्- मूल्यं अस्ति, यः मानवस्य जीवनस्य सर्वत्र प्रकटितः अस्ति। एषः गुणः मानवस्य जीवनं सुन्दरं, सार्थकं च करोति। अतः, सर्वे मानवाः मानवता इति गुणं धारयन्तु, यतः एषः गुणः मानवस्य जीवनस्य आधारभूतः अस्ति ।

मानवता इति विषयः सम्पूर्ण- मानवजातिं एकत्रितं कर्तु, सहानुभूतिं, करुणां च प्रदर्शयितुं प्रेरयति। मानवता इति एकं अमूल्यं रत्नम् अस्ति, यः मानवस्य हृदयस्य गहवरम् अस्ति।

खुशी पाण्डेयः,
स्नातकतृतीयवर्ष

संस्कृतसाहित्ये नारी

वैदिकयुगे नारीणां शिक्षा स्वकीय- उच्चतमस्थितौ आसीत्। नार्यः भाषा-साहित्य-कला-युद्धादिविद्यानां शिक्षां प्राप्नुवन्ति स्म। ताः ज्ञानक्षेत्रे अग्रगण्याः आसन्। बहुविधानां नारीणां अभिधानानि प्राप्यन्ते याः वैदिक मन्त्राणां द्रष्ट्यः आसन्। घोषा - अपाला - ब्रह्मजाया जुहू - दक्षिणा - रोमशा लोपाद्रुमा - ममता - यमी -विश्ववारा-सूर्या-सिकतादय सूक्तद्रष्ट्यः ऋषिकाः वर्तन्ते ।' एतादृशीनां नारीणां उल्लेखोऽपि उपलभ्यते याभिः सैनिकशिक्षाऽपि प्राप्ता। मुद्गलानी महाभागायाः नाम अस्याः शिक्षायाः विषये ब्रूयते यत् यदा वञ्चकाः तस्याः पत्युः गाः अपहृतवन्तः तु तया तैः वञ्चकैः सह युद्धः कृतः। नृत्यसंगीतललितकलानां अभ्यासोऽपि नारिभिः क्रियते स्म | वैदिक युगे शिक्षया सह नारीणां पुरुषाणां सदृशं उपनयन-संस्कारोऽपि भवति स्म। यज्ञोपवीत-संस्कारः उभयोः कृते समानरूपेण अपरिहार्यः आसीत्। अथर्ववेदे वर्णितमस्ति यत् "ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्"। अर्थात् स्त्रीभिः शिक्षां प्राप्य गुणयुक्तेन पुरुषेण सहः विवाहसंस्कारः करणीयः। मनुस्मृतौ एवं वर्णनं प्राप्यते यत् या नारी यादृशेन गुणयुक्तपुरुषेण सह विवाहं करोति सा तादृशैः गुणैः युक्ता जायते। अर्थात् सद्गुणयुक्तेन सह सद्गुणवती तथा दुर्गुणयुक्तेन सह सम्बन्धेन दुर्गुणवती भवति । अतएव कन्यया उचितकाले एव सुयोग्यवरेण सह विवाहसंस्कारः करणीयः। यजुर्वेदेऽपि वर्णनं प्राप्यते यत् “एका युवती कन्या यस्याः शिक्षा पूर्णा भवेत् तस्याः विवाहः शिक्षित पुरुषेणैव सह भवितव्यः" । एतादृशः एव विचारः ऋग्वेदेऽपि उपलभ्यते। वेदेषु नारी सद्गुणानामधिष्ठात्रीत्वेन स्वीक्रियते

नियति मिश्रा स्नातकतृतीयवर्षः

साहित्यम् एकं जीवनदर्शनम्

साहित्यम् मानवजीवनस्य महत्वपूर्णः अंशः अस्ति। इदम् अस्मज्जीवनस्य विभिन्नानाम् अङ्गानाम् अवबोधाय साहाय्यं करोति, जीवनस्य मूल्यानि आदर्शानि च शिक्षयति। साहित्यस्य अर्थः अस्ति लिखितपदाञ्जलीनां सङ्ग्रहः, यत्र कविताः, काव्यरचनाः, नाटकानि च अन्याः साहित्यिकरचनाः समाविष्टाः सन्ति। साहित्यं अस्माकं जीवनस्य विभिन्नानाम् अङ्गानां परीक्षणाय समीचीनां दृष्टिं ददाति, जीवनमूल्यानां च आदर्शानाञ्च शिक्षया परिपालनेन च मानवजीवनं सफलयति। साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः नरः साक्षात् पशुरेवास्ति। मानवस्य स्वकीये जीवने अन्येषाञ्च जीवने समापतितानां विभिन्नानां प्रेमसुखदुःखादिभावानां च समानुभूत्यै सहानुभूत्यै च साहित्यमेव सर्वोत्तमं साधनमस्ति। साहित्यस्य अन्यः महत्वपूर्णः अंशः अस्ति तस्य सांस्कृतिकमहत्त्वम्। साहित्यं मानवसंस्कृतेः परंपराणाञ्च सम्यगवबोधाय साहाय्यं करोति, सत्याहिंसास्तेयाब्रह्मचर्यापरिग्रहाणां शाश्वतमूल्यानां परिपालने साहित्याध्ययनेन साधीयसी प्रवृत्तिर्भवति। तेन भूतमात्रं प्रति मैत्रीकरुणामुदिताद्यनुष्ठानेन स्वस्य अन्येषाञ्च जीवने समृद्धिरायाति सौख्यमवाप्यते जीवनस्य साफल्यञ्च सञ्जायते।

महकशर्मा स्नातकतृतीयवर्षः

पर्यावरणम्

'पर्यावरण' शब्दः 'परि' तथा 'आवरण' इति पदद्वयेन निष्पद्यते। अत एव परितः आवरणं पर्यावरणम्। प्रायेण संस्कृतसाहित्ये पर्यावरणार्थे 'प्रकृति' पदं व्यवह्नियते। 'परिवेश' इति शब्दस्यापि पर्यावरणार्थे व्यवहारः । जीवजगति मानवस्य बुद्धिमत्ता सुविदिता। समाजे यत् पश्यति मानवः, यानि दृश्याणि तस्य दृगगोचराणि भवन्ति तैः तदीया जिज्ञासा स्वाभाविकी भवति। शङ्काकुलं भवति तदीयं मनः विविधप्रश्नाः जायन्ते तस्य मनसि। सः आत्मानं स्वतन्त्रं मन्यमानः अनावृतं मनुते। परन्तु तस्य चिन्तनं सर्वथा असमञ्जसम् एव। सः प्रत्यक्षरूपेण अप्रत्यक्षरूपेण वा वायुना, जलेन, भुवा, वृक्षेण, पतङ्गेन, पर्वतेन वा परिवृत्तो भवति। सकलेन वस्तुजातेन गभीरं प्राभावितं भवति तस्य जीवनम् । अतएव समाजे मानवेन सह जैविकपदार्थानामजैविकपदार्थानां च सम्बन्धं समाहितं करोति पर्यावरणम्। येन प्रभावितं भवति समग्रं मानवजगत। जीवजगति प्राणिनां प्रकृतिं व्यवहारं जीवनशैलीं च प्रभावयति पर्यावरणम्। पर्यावरणस्य क्षेत्रं विस्तृतम् असीमितम्, अनन्तं च।संस्कृतसाहित्ये पर्यावरणीया चर्चा बहुला। जन्मनः परं मानवस्य प्रकृत्या सह यथा सम्बन्धः तथा अवस्थानम्। प्रकृतिदत्तसाधनानि तस्य कृते उपहारसदृशानि भवन्ति। अतः मानवस्य विचारे प्रकृतिः अलौकिकशक्तिरूपा। प्रकृतिं कल्याणप्रदां विचार्य तस्याः जैविकानि अजैविकानि च तत्त्वानि अनुक्षणं पूजयति मानवः।

यथा-

ॐ मरुद्भ्यो नमः, ॐ अद्भ्यो नमः, ॐ वनस्पतिभ्यो नमः, ॐ दिवाचरेभ्यो नमः, ॐ भूतेभ्यो नमः, ॐ सर्वात्मभूतये नमः ।।"

वन्दना रायः,
स्नातक-तृतीय-वर्षः

संस्कृतसाहित्ये पुनर्जन्मविषयकं चिन्तनम्

कर्माधारित:पुनर्जन्मविषयकसिद्धान्तोऽयं न केवलं भारतीयदर्शनेषु अपितु सम्पूर्णविश्वसाहित्येष्वपि मौलिकसिद्धान्तरूपेण परिगणितः। अनेन प्रायशः सहस्रशः अप्रत्यक्ष- प्रश्नानां समस्यानां वा समाधानं सहजतयैव भवति। अस्य चर्चा सम्भवतः मानवसृष्टेरादित एव अनवरतरूपेण श्रूयते, का कथा पुनः पाश्चात्यदर्शनसाहित्यजैन बौद्धईसाईमुस्लिमादिसम्प्रदायानाम् ? कथञ्च म्रियते ? मरणानन्तरञ्च किम् ? कथञ्च तावत् पुनरागमनम्, कश्च तस्मिन्नाधारः, का वा व्यवस्थेति अनवरतरूपेण मनुष्यं विलोडयन्तः केचित् प्रश्नाः मनसि जाग्रति ।

वेदानां सर्वज्ञानमयत्वात्' एतत्सदृशप्रमुखवैदिकसिद्धान्तस्यापि आदिमः स्रोतः स एवेति निश्चप्रचमेतत् । बेदेषु मुहुर्मुहः चर्चास्य प्राप्यते, ऋग्वेदे एव विभिन्नार्थेषु कर्मशब्दस्य प्रयोगः चत्वारिशतधा दृश्यते। कुत्रचित् पराक्रमार्थे कुत्रचिच्च वीरकायें यज्ञदानाद्यर्थेषु वा। एतेषु अन्यान्यसशक्तप्रमाणेषु वा सत्स्वपि केचित् पाश्चात्यपण्डितम्मन्यमानाः अन्धेनैव अन्धाः नीयमानाः तदनुवर्तिनः चतुराक्षरज्ञानेनैव नात्मसदृशं कमपि मन्यमाना, क्षणस्थायिकीर्त्तावेव स्वात्मानं ऋषितुल्यं धन्यं वा मन्यमानाः पाश्चात्यप्रवर्तितमार्गेषु निर्नेत्रमिव गम्यमाना केचित् भारतीयाः अपि दुन्दुभिघोषपुरस्सरमुद्घोषयन्ति यत् कर्मसिद्धान्तोऽयं मूलतः न वेदे न च भारतीयपरम्परायां नापि वा दर्शनपरम्परायां वा वर्णितः अपितु केषाञ्चित् मते आदिवासिभिः स्वीकृतः, केषाञ्चिच्च मते पाश्चात्यैः मिश्रवास्तव्यैः वा इति कीथ-ओल्डेनवर्गादयः । अत्र लेखकमतोऽयं वेदेषु सर्वेऽपि सिद्धान्ताः बीजरूपेण प्राप्ताः तेषामेव च विकासः कालान्तरे ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषद्-दर्शन-धर्मशास्त्रादिषु । मूलाभावे कुतश्च पुनः तदनुवर्तिसाहित्येषु । इतीदमत्र दायेनावधेयं यत् आर्गवेदात् सम्पूर्णवैदिकवाङ्मये तदनुसारिसमस्तशास्त्रेष्वपि विषयस्यास्य चर्चा प्राधान्येन कृतेति नात्र शङ्कापङ्ककलङ्कलेशोपि ।

हर्षिता
स्नातकतृतीयवर्षः

संस्कृतसाहित्ये राष्ट्रिया एकता

संस्कृतसाहित्ये वैदिककालादारभ्य इदानीन्तनकालपर्यन्तं राष्ट्रिया एकता, विश्वभ्रातृत्वबोधः, संहतिबोधस्य भावना च पदे पदे परिलक्ष्यते । आधुनिकसंस्कृतसाहित्ये संस्कृतकवितायां विविधविषयाः उपलभ्यन्ते। समाजस्य बहुविधा समस्या, नारीनिर्यातनं,सन्त्रासवादः, आतङ्कवादः, मनुष्यत्वस्य अवक्षयः इत्यादि विषयान् आधुनिक संस्कृतलेखकाः छन्दोबद्धरीत्या काव्यरूपं दत्तवन्तः ।संस्कृतलेखकाः सहजसरलभाषया तेषां अभिव्यक्तिं प्रकाशितवन्तः। आधुनिककविना आचार्यसत्यव्रतशास्त्रिणा स्वविरचिते 'इन्दिरागान्धीचरितम्' इति महाकाव्ये विश्वबन्धुत्वस्य भावना प्रकटीकृता

“सर्वेऽत्र सम्भूय सुखं वसन्तु प्रियं वदन्तु प्रियमाचरन्तु ।
न विग्रहो वा कलहो भवेद्वा स्याद् भारतं नन्दनतुल्यरूपम् ॥” इति

पुनरपि शास्त्रिमहाभागाः विश्वस्य सर्वत्र मैत्रीभावना आगच्छतु इति वर्णितवन्तः-

“मैत्री समैरत्र जनैरभीष्टा कल्याणबुद्धिः प्रसृताऽत्र साध्वी ।
अत्रैव पूर्वे ऋषयोऽभ्यवोचन् कुटुम्बमेकं वसुधां समग्राम्॥” इति

डॉ.कपिलदेवद्विवेदीमहाभागेनापि 'मातृभूमिः' इति शीर्षकेण विश्वबन्धुत्वस्य भावना प्रस्तुता काव्ये-

“विश्वशान्तिः सदा ते मता संमता विश्वबन्धुत्वशिक्षा सदा ते प्रिया।
त्वं तु विश्वं कुटुम्बं सदा मन्यसे ज्ञानदात्री सदा पापहत्री मता।।” इति

अन्यत्रापि द्विवेदिमहाभागाः काव्यमाध्यमेन सर्वान् जनान् विश्वबन्धुत्वं शिक्षयन्ति । अथ च भारतराष्ट्रस्य गौरवं विश्वपटले स्थापयन्ति-

“यत्र सत्य शिव सुन्दर राजते यत्र धर्मार्चना वीरपूजा सदा।
यत्र विश्वं कुटुम्बं मतं श्रेयसे तं भारतं नुमः।”

प्रायः सर्वेषु संस्कृतवाङ्मयेषु विश्वबन्धुत्वं कामयन्ते लेखकाः। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' इत्यस्य भावना सम्प्रति आवश्यकी वर्तते। वयं पश्यामः यद् विश्वं रागद्वेषादिभावनया ज्वलितं वर्तते। एकं राष्ट्रम् अपरं प्रति क्रुध्यति । प्रतिदिनं परस्परं येन केन प्रकारेण विवाद एव दृश्यते लोके। न केवलं राष्ट्राध्यक्षा एव विवादे पतिताः, अपितु सभ्याः नागरिकाः अपि परस्परं रागद्वेषादिभावनया प्रभाविताः ।

ईशा बांगा
स्नातकतृतीयवर्षः

मानवतायाः अभिप्रायः

मानवतायाः अर्थः अस्ति सार्वभौमप्रेमम्। यत्र समग्रं जगत् अस्माकम् मित्रम् वर्तते। यजुर्वेदे अपि उल्लिखितं -

“मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षा।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।”(यजुर्वेद 36/18)

मानवता मानवजीवनस्य सारभूता अस्ति। मानवतायां निर्धनानां कृते करुणा, सेवाभावश्च जायते। मानवतायाः सम्पूर्णः अर्थः वर्तते यत् सर्वे मानवाः समानाः सन्ति। मानवतायाः अर्थः शान्तिः अपि वर्तते, विश्वे शान्ति- स्थापनाय मानवता अत्यावश्यकी। अतः मानवतानुपालम् अस्माकं कर्तव्यमस्ति।

मुस्कान चौबे
स्नातकद्वितीयवर्षः

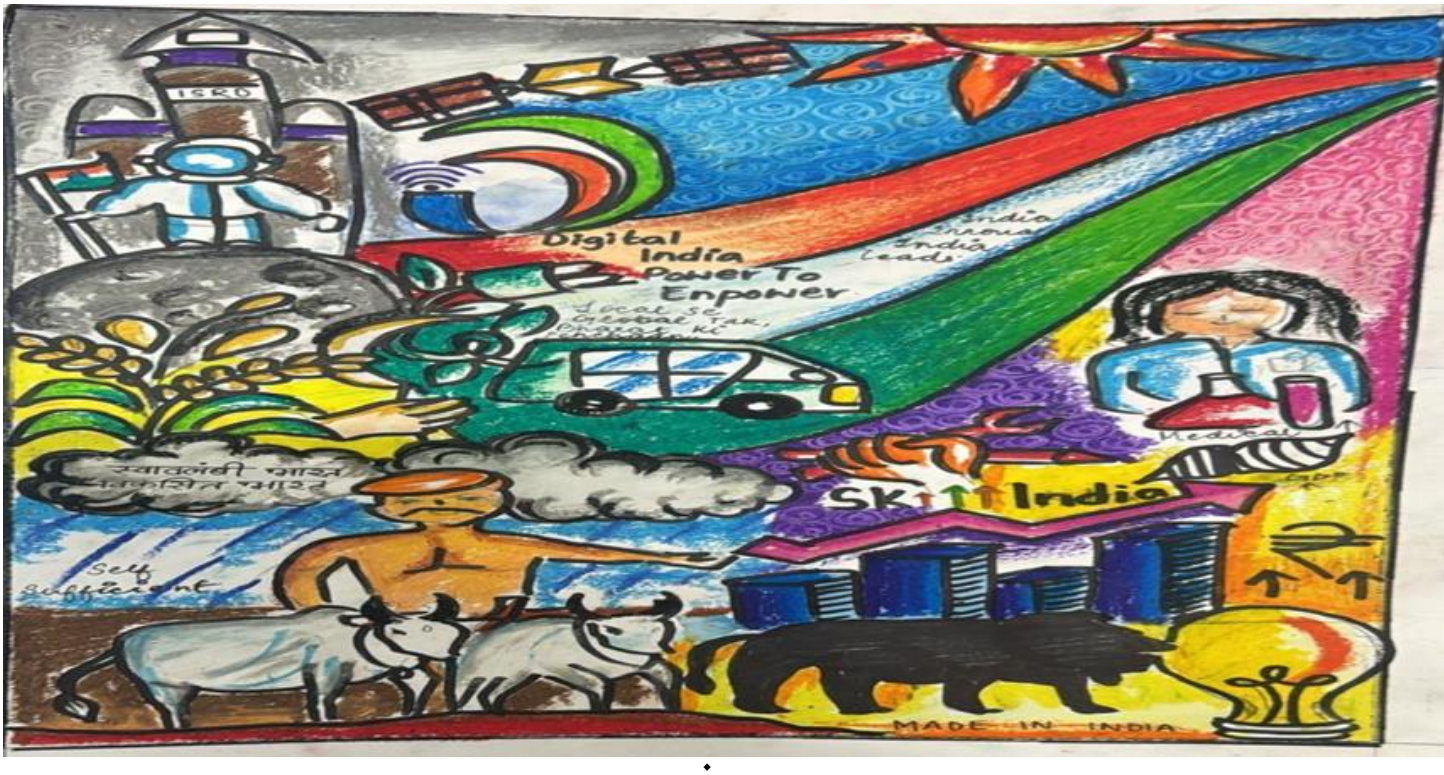

यन्त्राणां महत्त्वम्

यथा कालगमनम् अभवत्, तथा मानवाः नूतनान् आविष्कारान् अरचयन्। आविष्कारेषु एतेषु, यन्त्राणि मुख्यानि आसन्।

येनैपि वस्तुना मनुष्यकार्यम् अल्पीक्रियते, तत् यन्त्रं कथयितुं शक्यते। यन्त्राणि तु प्राचीनकालादेव निर्मीयन्ते स्म। परं सत्यरूपेण यन्त्रयुगं 'Industrial Revolution' अथवा औद्योगिकक्रान्तिः इत्यस्यानन्तरं प्रारब्धम्।

आधुनिकजीवनं यन्त्रैः विना अशक्यमेव। प्रायः प्रत्येकस्मै कार्याय यन्त्रमेकं वर्तते। विशेषतः येभ्यः कार्येभ्यः श्रमः आवश्यकः, तेभ्यः यन्त्रनिर्माणम् अभवत्। यथा -वस्त्रक्षालनाय अधुना यन्त्रं निर्मितम्। यन्त्राणि तत्रापि वर्तन्ते, यत्र मनुष्याः सुखं वाञ्छन्ति। यथा - वायुशीतलीकरणयन्त्रं कक्षे शीतलतां प्रसारयति। यन्त्राणाम् उपयोगः उद्योगेषु अपि भवति।

परं यन्त्रेषु अधिकावलम्बनं योग्यं नास्ति । यदि तादृशं भवति, तर्हि मनुष्याणां स्वक्षमता क्षयं यास्यति। एकदा एषा स्थितिः भविष्यति, यस्यां मनुष्याः स्वत्वेन किमपि कर्तुं समर्थाः न भविष्यन्ति ।

यन्त्राणि मुख्यतः हितकार्यं कुर्वन्ति। परन्तु प्रत्येकवस्तुवत् तेषां हानिः लाभश्च स्तः। अतः यन्त्राणि जीवने महत्त्वपूर्णानि सन्ति, परन्तु मनुष्याः विवेकबुद्धया एव यन्त्राणि उपयोजयेयुः।

अंजली राजबंशी,
स्नातकद्वितीयवर्ष:

यन्त्राधीनतायाः युगः

यन्त्रयुगः अस्माकं जीवनस्य अनिवार्यः पक्षः संवृत्तः।मानवस्य प्रत्येकं पक्षः यंत्राणां उपयोगेन प्रभावितः जातः। अधुना वयं स्वस्य किमपि कार्यं शीघ्रं सुलभतया च कर्तुं शक्नुमः। गृहे सर्वेषां कार्याणां कृते यन्त्राणि उपलभ्यन्ते। वस्त्राणां पात्राणां च प्रक्षालनादिषु पुरातनसमये कठिनपरिश्रमः समयः च भवति स्म, अद्यत्वे यंत्राणां उपयोगेन सर्वे कार्यं कतिपयेषु क्षणेषु एव कर्तुं शक्यते। माइक्रोवेवयन्त्रे अन्नं शीघ्रं विपच्य उष्णं स्थापयितुं शक्यते । गृहस्य शोधनार्थम् अनेकानि यन्त्राणि अपि सन्ति येषां साहय्येन सुविधानुसारं कार्यं कर्तुं शक्यते। परिवहनसाधनानाम् कारणाद् वयं शीघ्रं कुत्रापि प्राप्तुं शक्नुमः। अधुना वयं दूरनिवासीनि मित्राणि बन्धुजनांश्चच यदा स्मरामः तदा दूरवाणीमध्यमेन समीपे आगतानि पश्यामः। दूरतायाः अर्थः नास्ति इतः परम्। प्रति निमेषं मोबाईल वा अन्तर्जालमाध्यमेन विश्वस्य कस्मिन् अपि कोणे निवसद्भिः जनैः सह सम्पर्कं कर्तुं शक्नुमः। एवं यन्त्राणां आगमनेन अस्माकं जीवने महत्त्वपूर्णानि परिवर्तनानि अभवन् ।

आराधना रायः
स्नातकतृतीयवर्षः

PRINCIPAL'S AWARDS AND ACHIEVEMENTS

Introduction:

Principal - Prof. Meena Charanda

Professor Meena Charanda is a distinguished academician and administrator, currently serving as the Principal of Kalindi College, University of Delhi. With a rich educational background and extensive research experience, Prof. Charanda embodies a commitment to academic excellence and social justice. Her leadership is characterized by a blend of scholarly rigor and proactive engagement in community service initiatives. Prof. Charanda holds a Ph.D. from the Department of Political Science at the University of Delhi, with her doctoral research focusing on the role of Dalit legislators in the Uttar Pradesh Assembly. Her academic journey also includes a Master of Philosophy degree in African Studies, where she delved into the political dynamics of South Africa, reflecting her interdisciplinary approach to understanding socio-political issues. As an accomplished author, Prof. Charanda has contributed significantly to the academic discourse through her publications on topics ranging from Dalit women's struggles to the intersection of media, democracy, and human rights advocacy. In addition to her scholarly contributions, Prof. Charanda has been deeply involved in university governance and community outreach activities. She has served in various administrative roles, including convening committees related to equal opportunities, media, library, and student welfare. Her dedication to promoting diversity and inclusivity is evident in her leadership of initiatives such as the Equal Opportunity Cell and her involvement in organizing events commemorating the legacy of social reformers like Dr. B.R. Ambedkar. Beyond academia, Prof. Charanda's commitment to social justice extends to her engagement in community service projects, such as organizing orientation programs for students with disabilities, facilitating scholarship opportunities, and raising awareness on issues of gender-based violence.

Prof. Meena Charanda has amassed a remarkable array of accomplishments, showcasing her dedication to both academia and community service. Prof. Charanda has been awarded with a very prestigious "Honorary Doctorate" by an esteemed Socrates Social Research University. Meena Charanda has added another feather to her hat for awarded with International Sanskriti Award for outstanding achievements and contribution in the field of academics and social work by Socrates social Research University, at India international centre, Delhi on 30th March 2024 Her commitment to women's empowerment is evident through consecutive awards received in 2021 and 2022 from the Indraprastha Shiksha and Khel Vikas Sangathan, recognizing her significant contributions in this field. Additionally, her efforts have been internationally recognized, as evidenced by the prestigious "Indo Nepal Samrasta Award" and the "Mahila Shakti Shiromani Award" bestowed upon her in Kathmandu, Nepal. Prof. Charanda's prowess as an educator has been acknowledged through the Best Lecturer Award conferred by the Directorate of Higher Education, Government of Delhi, coupled with a generous cash prize, she has also grabbed various other prestigious awards such as Women Empowerment Awards 2021 (Indraprastha Sliksha Evam Khel Vikas Sanghthan Women Wing (Regd)), Women Empowerment Awards 2022 (Indraprastha Shiksha Evam Khel Vikas Sanghthan Women Wing (Regd)) and The Glory of India (Gold Medallist 2019) Best Citizen Publishing House. This year, Prof. Meena has been honored with the esteemed Mata Savitri Bai Phule International Award, a prestigious recognition of her outstanding contributions.Her multifaceted talents extend beyond the academic realm, as demonstrated by her involvement in cultural events, workshops, and webinars aimed at skill development and fostering dialogue on pertinent issues like time management during the Covid-19 pandemic and the evolving media landscape. These accomplishments collectively underscore Prof. Charanda's exceptional contributions to education, women's empowerment, and community engagement, solidifying her as a beacon of inspiration and leadership in her field.

SOME GLIMPSES OF THE AWARD CEREMONY AND MEDIA COVERAGE

अंतर्राष्ट्रीय माता सावित्रीबाई फुले शोध संस्थान

मुख्य कार्यालय : आर-33 वाणी विहार, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059

दूरभाष: 9717114595, 9868606210

सावित्रीबाई फुले अंतर्राष्ट्रीय अवार्ड

प्रोफेसर मीना चरांदा

प्रिंसिपल - कालिंदी कॉलेज , दिल्ली विश्वविद्यालय

शिक्षा एवं समाजसेवा के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय योगदान हेतु

सम्मान-प्रतीक

23 जनवरी, 2025

यह सम्मान उन विभूतियों को दिया जाता है जिनकी शिक्षा, साहित्य, कला, संस्कृति, पत्रकारिता एवं शोध में उत्कृष्ट उल्लेखनीय सेवाएँ रही हैं। इस कार्य हेतु आपके प्रेरक और रचनात्मक कार्यों के लिए आपको सावित्रीबाई फुले अंतर्राष्ट्रीय अवार्ड प्रदान किया जाता है। आशा है आपका व्यक्तित्व कृतित्व उपलब्धियों से परिपूर्ण हो। सम्मान आपके भावी जीवन की मंगलकामनाएं करता है।

स्थान: दिल्ली यूनिवर्सिटी वीमेंस एसोसिएशन, सेमिनार हाल
7-छात्रा मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. के. पी. सिंह	सुश्री पल्लवी प्रियदर्शिनी	डॉ. हंसराज सुमन
(महासचिव)	(सचिव)	(चेयरमैन)

आयोजक : अंतर्राष्ट्रीय माता सावित्रीबाई फुले शोध संस्थान

PRINCIPAL'S AWARDS AND ACHIEVEMENTS

कालिंदी कॉलेज की प्रिंसिपल प्रोफेसर मीना चरांदा को वर्ष --2024 का इंटरनेशनल संस्कृति अवॉर्ड से किया जाएगा सम्मानित

नई दिल्ली, सोक्रेट्स सोशल रिसर्च यूनिवर्सिटी (ट्रस्ट) की ओर से वर्ष --2024 का इंटरनेशनल संस्कृति अवॉर्ड शिक्षा व समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने पर दिल्ली विश्वविद्यालय के कालिंदी कॉलेज की प्रिंसिपल प्रोफेसर मीना चरांदा को दिया जाएगा । यह अवॉर्ड उन्हें शनिवार 30 मार्च 2024 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में एक कार्यक्रम में प्रदान किया जाएगा । यह जानकारी ट्रस्ट के चेयरमैन श्री के.योगेश ने दी ।

सोक्रेटस सोशल रिसर्च यूनिवर्सिटी (ट्रस्ट) के चेयरमैन श्री के.योगेश ने बताया है कि इंटरनेशनल संस्कृति अवॉर्ड --2024 के लिए एक 5 सदस्यीय कमेटी गठित की गई थीं । कमेटी में हर क्षेत्र से अनुभवी सदस्यों को रखा गया था । कमेटी के पास 50 से अधिक महिलाओं के नाम सामने आए । अंत में कमेटी ने अंतिम रूप से शिक्षा व समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने व राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट शोध कार्य करने पर दिल्ली विश्वविद्यालय के कालिंदी कॉलेज की प्रिंसिपल प्रोफेसर मीना चरांदा के नाम को बेहतर पाया गया । संस्कृति अवॉर्ड के लिए अन्य महिलाएं व पुरुषों का चयन किया गया जिसकी घोषणा जल्द की जाएगी ।

के.योगेश ने बताया है कि प्रोफेसर चरांदा पिछले दो दशक से अधिक से कालिंदी कॉलेज के राजनीति विज्ञान विभाग में अध्यापन कार्य कर रही है । इन्होंने उत्तर प्रदेश की दलित विधानसभाओ का अध्ययन विषय पर दिल्ली यूनिवर्सिटी से पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है । साथ ही इनकी उत्तर प्रदेश की विधानसभा में दलित एमएलएज की भूमिका पर पुस्तक भी प्रकाशित हो चुकी है । इसके अलावा 50 से अधिक लेख विभिन्न पत्र -पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं तथा कॉलेज की विभिन्न कमेटियों , गतिविधियों का दायित्व का निर्वहन किया है । साथ ही इनके निर्देशन में दो पीएचडी शोधार्थी शोध कार्य कर रहे हैं । के.योगेश ने बताया है कि प्रोफेसर चरांदा को अवॉर्ड में यूनिवर्सिटी की ओर से स्मृति चिन्ह , पटका , शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा ।

प्रो. मीना चिरांदा को मिलेगा सावित्रीबाई फुले अवार्ड

नई दिल्ली (एसएनबी)। अंतरराष्ट्रीय माता सावित्रीबाई फुले शोध संस्थान जनवरी के अंतिम सप्ताह में शिक्षा की क्रांति की ज्योति जलाने वाली भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले की 194वीं जयंती पर शिक्षा, साहित्य, कला, संस्कृति, पत्रकारिता एवं समाजसेवा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य और उल्लेखनीय योगदान देने वाली 25 विशिष्ट विभूतियों को माता सावित्रीबाई फुले अंतर्राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित करेगा।

यह जानकारी शनिवार को संस्थान के चेयरमैन डॉ. हंसराज सुमन और महासचिव प्रो. केपी सिंह ने दी है । उन्होंने बताया है कि इस सम्मान के लिए ज्यूरी बोर्ड बनाया गया है। प्रोफेसर पीडी सहारे को ज्यूरी बोर्ड का अध्यक्ष बनाया गया है। डॉ. हंसराज ने बताया है कि संस्थान की ओर से 25 महिलाओं व पुरुषों को सम्मानित किया जाएगा। इस बार यह अवार्ड कालिंदी कॉलेज की प्रिंसिपल प्रोफेसर मीना चिरांदा को दिया जाएगा। प्रोफेसर मीना चिरांदा ने बालिकाओं की शिक्षा के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए है। सम्मान स्वरूप उन्हें प्रशस्ति पत्र, शाल, स्मृति चिन्ह और 11 हजार रुपये की धनराशि भेंट की जाएगी। इसके अतिरिक्त सामाजिक कार्यकर्ता एवं महिला अधिकारों के लिए निरंतर संघर्ष करने वाली विशिष्ट महिलाओं व पुरुषों को भी सम्मानित किया जाएगा।

कालिंदी कॉलेज की प्रिंसिपल प्रोफेसर मीना चरांदा को वर्ष 2024 का इंटरनेशनल संस्कृति अवॉर्ड से किया जाएगा सम्मानित

» नई दिल्ली,एजेंसी।

सोक्रेट्स सोशल रिसर्च यूनिवर्सिटी (ट्रस्ट) की ओर से वर्ष --2024 का इंटरनेशनल संस्कृति अवॉर्ड शिक्षा व समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने पर दिल्ली विश्वविद्यालय के कालिंदी कॉलेज की प्रिंसिपल प्रोफेसर मीना चरांदा को दिया जाएगा। यह अवॉर्ड उन्हें शनिवार 30 मार्च 2024 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में एक कार्यक्रम में प्रदान किया जाएगा।

यह जानकारी ट्रस्ट के चेयरमैन श्री के.योगेश ने दी। सोक्रेटस सोशल रिसर्च यूनिवर्सिटी (ट्रस्ट) के चेयरमैन श्री के.योगेश ने बताया है कि इंटरनेशनल संस्कृति अवॉर्ड --2024 के लिए एक 5 सदस्यीय कमेटी गठित की गई थी। कमेटी में हर क्षेत्र से अनुभवी सदस्यों को रखा गया था। कमेटी के पास 50 से अधिक महिलाओं के नाम सामने आए। अंत में कमेटी ने अंतिम रूप से शिक्षा व समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने व राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट शोध कार्य करने पर दिल्ली विश्वविद्यालय के कालिंदी कॉलेज की प्रिंसिपल प्रोफेसर मीना चरांदा के नाम को बेहतर पाया गया। संस्कृति अवॉर्ड के लिए अन्य महिलाएं व पुरुषों का चयन किया गया जिसकी घोषणा जल्द की जाएगी। के.योगेश ने बताया है कि प्रोफेसर चरांदा पिछले दो दशक से अधिक से कालिंदी कॉलेज के राजनीति विज्ञान विभाग में अध्यापन कार्य कर रही है।

इन्होंने उत्तर प्रदेश की दलित विधानसभाओ का अध्ययन विषय पर दिल्ली यूनिवर्सिटी से पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है। साथ ही इनकी उत्तर प्रदेश की विधानसभा में दलित एमएलएज की भूमिका पर पुस्तक भी प्रकाशित हो चुकी है। इसके अलावा 50 से अधिक लेख विभिन्न पत्र -पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं तथा कॉलेज की विभिन्न कमेटियों , गतिविधियों का दायित्व का निर्वहन किया है। साथ ही इनके निर्देशन में दो पीएचडी शोधार्थी शोध कार्य कर रहे हैं। के.योगेश ने बताया है कि प्रोफेसर चरांदा को अवॉर्ड में यूनिवर्सिटी की ओर से स्मृति चिन्ह , पटका , शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा।

मधुमक्खी पालन , शहद उत्पादन में व्यवसाय की संभावनाएं विषय पर आयोजित कार्यशाला में व्यक्त किए। पी एच डी चेमबर आफ कामर्स मध्यप्रदेश चेप्टर की ओर से आयोजित इस विभाग द्वारा जो योजनाएं चलाई जा रही है उनका लाभ लेकर युवा, किसान, महिलाएं बेहतर व्यवसाय कर सकते हैं। इसके लिए बैंक द्वारा आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाने का प्रावधान भी है।

मानसिक कष्ट दूर हो जाया करता था। जो सत्ता में हो या विपक्ष के बड़े नेता, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति सभी उनके पैरों में नतमस्तक रहते थे। पानी पर चलते थे देवरहा बाबा जी हां, हम बात कर बताया कि देवरहा बाबा एक सिद्ध पुरुष और कर्मठ योगी थे। देवरहा बाबा ने कभी अपनी उम्र, तप, शक्ति और सिद्धि के बारे में कोई दावा नहीं किया। वे बिना पूछे ही सबकुछ जान साधना की शक्ति थी। देवरहा बाबा के पास ज्ञान का खजाना था। उनका दर्शन करने के लिए देश-दुनिया के बड़े-बड़े दिग्गज भी उनके पास आते थे। बाबा सरयू नदी के किनारे स्थित उनके सारे कष्ट दूर हो जाते थे। इंदिरा गांधी को हाथ के पंजे का आशीर्वाद देवरहा बाबा का दर्शन करने और आशीर्वाद लेने के लिए पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जाती रहती थीं। देश में में माहिर थे। बाबा के चमत्कारों को लेकर अनेक कहानियां हैं। बाबा देवरहा भगवान श्री राम के भक्त थे और श्री कृष्ण को भी बाबा श्रीराम को अपना ईष्ट देव मानते थे।

दूसरा अंतर्राष्ट्रीय सावित्रीबाई फुले अवार्ड कालिंदी कॉलेज की प्रिंसिपल प्रोफेसर मीना चिरांदा को

माता सावित्रीबाई फुले की 194 वीं जयंती के अवसर पर 25 महिलाओं व पुरुषों को दिया जाएगा यह सम्मान

माधव एक्सप्रेस • प्रतिनिधि
www.madhavexpress.com

उज्जैन। अन्तरराष्ट्रीय माता सावित्रीबाई फुले शोध संस्थान जनवरी 2025 के अंतिम सप्ताह में शिक्षा की क्रांति ज्योति जलाने वाली राष्ट्रमाता, भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले की 194 वीं जयंती के अवसर पर शिक्षा, साहित्य, कला, संस्कृति, पत्रकारिता एवं समाजसेवा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य और उल्लेखनीय योगदान देने वाली 25 विशिष्ठ विभूतियों को माता सावित्रीबाई फुले अंतर्राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित करेगा। यह जानकारी शनिवार को माता सावित्रीबाई फुले की जयंती के अवसर पर संस्थान के चेयरमैन डॉ. हंसराज सुमन तथा महासचिव प्रो. के.पी. सिंह ने दी है। उन्होंने बताया है कि इस सम्मान के लिए ज्यूरी बोर्ड बनाया गया है। प्रोफेसर पी.डी. सहारे को ज्यूरी बोर्ड का अध्यक्ष बनाया गया है। संस्थान के पास 100 से अधिक विशिष्ट महिलाओं व पुरुषों के आवेदन आ चुके हैं जिसकी जल्द ही घोषणा ज्यूरी बोर्ड द्वारा कर दी जाएगी। संस्थान के चेयरमैन डॉ. हंसराज सुमन ने बताया है कि संस्थान की ओर से 25 महिलाओं व पुरुषों को सम्मानित किया जाएगा। इस बार ज्यूरी बोर्ड ने निर्णय लिया है कि दूसरा माता सावित्रीबाई फुले अंतर्राष्ट्रीय अवार्ड कालिंदी कॉलेज की प्रिंसिपल प्रोफेसर मीना चिरांदा को दिया जाएगा। प्रोफेसर मीना चिरांदा ने बालिकाओं की शिक्षा के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। सम्मान स्वरूप उन्हें प्रशस्ति पत्र, शाल, स्मृति चिह्न और ग्यारह हजार रुपये की धनराशि भेंट की जाएगी। इसके अतिरिक्त सामाजिक कार्यकर्ता एवं महिला अधिकारों के लिए निरंतर संघर्ष करने वाली विशिष्ट महिलाओं व पुरुषों को भी सम्मानित किया जाएगा। इसमें विवेकानंद कॉलेज की प्रिंसिपल प्रोफेसर पिंकी मौर्य , डिप्टी डीन प्रोफेसर गीता सहारे , प्रोफेसर अरुण चौधरी , के. योगेश , डॉ.बलवान सिंह बिबयान , गाँधी भवन के निदेशक प्रोफेसर के .पी. सिंह , प्रोफेसर मनोज कुमार कैन (हिन्दी विभाग ,पीजीडीएवी कॉलेज) डॉ. मनोज वर्मा (संसद टीवी एंकर) केंसर विशेषज्ञ डॉ.विष्णु मूर्ति को इस वर्ष का सावित्रीबाई फुले अवार्ड दिया जाएगा। बाकी नामों की सूचना भी जल्दी ही ज्यूरी आगामी बैठक में घोषित करेगी। डॉ. सुमन ने बताया है कि माता सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम महिला शिक्षिका थीं। उनका जन्म 3 जनवरी 1831 को महाराष्ट्र के सतारा ज़िले के नायगाँव में हुआ था। सावित्रीबाई फुले एक समाज सुधारक, शिक्षिका और कवयित्री थीं। उन्होंने अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। सावित्रीबाई फुले ने अपने जीवन को एक मिशन बना दिया था। उनका उद्देश्य था कि विधवाओं का विवाह हो, छुआछूत खत्म हो, महिलाओं को अपनी उन्नति के लिए आजादी मिले। दलित महिलाओं को शिक्षा का अधिकार मिले। सावित्रीबाई फुले ने अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर सन 1848 में पुणे के भिड़ेवाड़ा में लड़कियों के लिए पहला आधुनिक भारतीय स्कूल खोला था। यद्यपि माता सावित्रीबाई फुले के इस कार्य में सवर्ण समाज काफी व्यवधान डाला था। उन्हें गालियाँ दी जाती थीं, पत्थर मारे जाते थे, उन पर कीचड़, गोबर और मानव-मल फेंका जाता था। वे अपने साथ दो कपड़े लेकर जाती थीं। जिससे कि गंदे किए गए कपड़े बदल सकें। इतने विरोध के बावजूद वे स्त्रियों के अधिकारों और उनकी शिक्षा के लिए संघर्ष करती रहीं। उनका उद्देश्य था कि स्त्रियों को समाज में बराबर का दर्जा मिले पुरुषों के समान उन्हें भी शिक्षा और स्वावलंबन का अधिकार मिले। डॉ.सुमन ने बताया है कि बालिकाओं की शिक्षा के लिए अलग विद्यालय खोलना यह विश्व इतिहास की पहली घटना थी। आजादी के बाद भारत में बालिकाओं के लिए अलग विद्यालय और विश्वविद्यालय की योजना माता सावित्रीबाई फुले की ही देन है। माता सावित्रीबाई फुले ने समाज में जाति और लिंग के आधार पर होने वाले भेदभाव और अन्याय को खत्म करने के लिए काम किया था। उन्होंने अपने घर का कुआँ दलितों को पानी लेने के लिए खोल दिया था। उस समय सवर्ण समाज ने दलितों को सार्वजनिक तालाबों और कुओं से पानी लेने पर पाबंदी लगाई थी। माता सावित्रीबाई फुले ने विधवाओं के लिए आश्रम खोला था। यह व्यवस्था पहली बार भारतीय परिवेश में की जा रही थी। उन्होंने आगे बताया कि अनेक कठिनाइयों और समाज के प्रबल विरोध के बावजूद महिलाओं का जीवन स्तर सुधारने व उन्हें शिक्षित तथा रूढ़िमुक्त करने में सावित्रीबाई फुले के कार्यों को भुलाया नहीं जा सकता है। संस्थान के महासचिव प्रोफेसर के.पी.सिंह ने कहा कि इस शोध संस्थान का उद्देश्य माता सावित्रीबाई फुले के कार्य को आगे बढ़ाना रहा है। उनकी स्मृति में यह संस्थान प्रति वर्ष उनके जन्मदिन पर शिक्षा, साहित्य, कला व संस्कृति , शोध व पत्रकारिता में योगदान देने वाली सामाजिक कार्यकर्ता, विशिष्ट महिलाओं व पुरुषों को सम्मानित करता है। उन्होंने बताया है कि माता सावित्रीबाई फुले की प्रेरणा वर्तमान समाज के व्यवस्थित विकास के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। रूढ़िवादी पिछड़े समाज में सुधार के लिए स्त्रियों को शिक्षित करना आवश्यक है। एक शिक्षित महिला ही समाज को उचित दिशा दे सकती है। यह शिक्षा ही स्त्रियों के व्यक्तित्व विकास और स्वावलंबन में सहायक हो सकती है। इसीलिए माता सावित्रीबाई फुले के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए समाज के हरेक तबके को आगे आना चाहिए।

OATH-TAKING CEREMONY AND FRESHER'S WELCOME

देशबन्धु
Influencing Public Opinion Since 1959
17 Oct 2024 - Page 2

आज की युवा पीढ़ी ही कल का भविष्य : सतीश चंद्र

झकालिंदी कॉलेज में धूमधाम से मना नवागंतुक स्वागत कार्यक्रम

नई दिल्ली, 16 अक्टूबर (देशबन्धु)। दिल्ली विश्वविद्यालय के कालिंदी कॉलेज में बुधवार को नवागंतुक छात्रों का स्वागत और स्टूडेंट यूनियन के पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण कार्यक्रम धूमधाम से आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में भारत सरकार के केंद्रीय कोयला एवं खनन राज्यमंत्री सतीश चंद्र दुबे की गरिमामयी उपस्थिति रही। विशिष्ट अतिथि के तौर पर भारतीय जनता युवा मोर्चा के दिल्ली प्रदेश प्रभारी डॉ. अभिषेक टंडन मौजूद रहे। कॉलेज की प्राचार्या प्रो. मीना चरांदा ने अतिथियों का गर्मजोशी से स्वागत किया। छात्राओं को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि सतीश चंद्र झदुबे ने कहा कि आज की युवा पीढ़ी ही कल का भविष्य है। अगर युवा सही दिशा में आगे बढ़ते हुए देशहित में कार्य करेंगे तो भारत को विकसित देश बनने से कोई नहीं रोक सकता। उन्होंने कहा कि महिला सशक्तिकरण की दिशा में कालिंदी कॉलेज जैसे महिला कॉलेज अहम भूमिका निभा रहे हैं। विशिष्ट अतिथि डॉ. अभिषेक टंडन ने कहा कि हमें स्टार्टअप की दिशा में कार्य करना चाहिए। युवा पीढ़ी स्टार्टअप पर काम करेगी तो देश तेजी से तरक्की करेगा।

NATIONAL FESTIVALS

Annual Fest of Biochemical Society "Time Wrap: Where Science meets Culture"

Two Days Workshop on Science, Technology, and Wellness: Transforming Lives through Innovation

Oath Ceremony cum Lecture on Forensic Science

Department of Botany

Department of Commerce

Miss Commerce

Department of Computer Science

Group photograph with the Principal during the inaugural ceremony of Sattva 2024-25, held on 3rd October 2024 in the Seminar Room.

A visit to Microsoft office, Gurugram by the students of Computer Science department organised by Sattva under TechX 2024.

Department of Economics

Fresher welcome

Educational visit to Pradhanmantri Sangrahlya

DEPARTMENT OF JOURNALISM: SAHAAFAT

Dr. Manisha Tomar, TIC, Journalism Department and Dr. Praveen Gautam, Asst. Professor, Journalism Department facilitating Ms. Chandrika Joshi speaker of the seminar on News , Narrative & Nari Shakti
Date :7/03/2025

Students of Department of Journalism participates in the India TV Educational Conclave
Date : 27/02/2025
Location: India TV Educational Conclave, New Delhi

Students of Department of Journalism visit Aadi Mahotsav organized by TRIFED India
Date : 20/02/2025
Location : National Tribal Festival, Major Dhyan Chand Stadium, New Delhi

English Literary Society

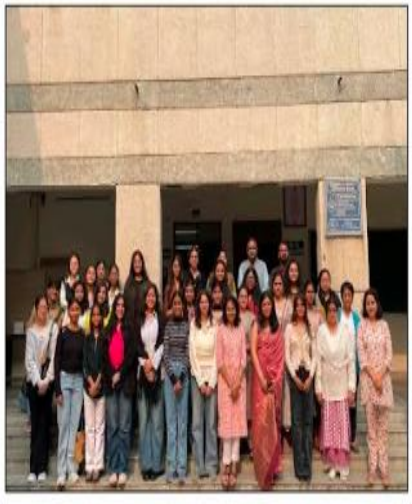

Student Seminar titled Frames and Pages: Bridging Literature and Cinema through Realism was held on 21st February 2025, with Dr. Mithuraaj Dhusiya as the keynote speaker.

A talk titled From Inclusion to Transformation: Rethinking Disability in Education, featuring Mr. Sandeep Singh, was held on 28th February 2025

Department of hindi

हिंदी पखवाडा समापन और पुरस्कार वितरण समारोह ,आग़ाज़ थिएटर क्लब की प्रस्तुति , संगम परिसर ,30 सितम्बर 2024

हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत एक दिवसीय व्याख्यान में कालिन्दी महाविद्यालय प्राचार्य प्रो.मीना चरांदा मुख्य अतिथि प्रो.अनिल राय ,प्रो.मंजु मुकुल काम्बले सेमिनार कक्ष 18 सितम्बर 2024

अकादमिक विजिट पुस्तक मेला भारत मंडपम प्रगति मैदान

DEPARTMENT OF HISTORY

Day2:AhilyaBaiconference

Picture1:UnderstandingAfrica

Current Trending Geopolitics With Rise of Trump
Speaker:YashasviChandra

Sunyatsenandthechineserevolution.
Speaker:K.T.SSarao

Department of Music

Department of Sanskrit

10 days Sanskrit Speaking Workshop in the collaboration with Sanskrit Bharti on 14th-25th October 2024

The Special lecture - by Pro. Satyapal Singh, Professor in Sanskrit Department, University of Delhi

Physithon Society, The Physics Society

The Orientation Day for BSc(H) Physics 1st year and BSc Physical Science 1st year students, was held on August 30, 2024, at Kalindi College, University of Delhi.

Students celebrated Teacher's Day in the college on September 5th, 2024, to honor and appreciate the efforts made by their dedicated teachers.

BA Program Committee

Lecture session Date: 25th Nov Venue: Seminar room
Guest Speakers: Prof. Tanvir Aeijaz and Prof. Somosri Hore

Guest speakers along with the convenor and department core team members

Department Of Physical Education
Inter class Match 2024-25

Kho kho

Volleyball

Inter class Match 2024-25

Taekwondo

Inter class Match 2024-25

Hand ball

Kabbadi

Badminton

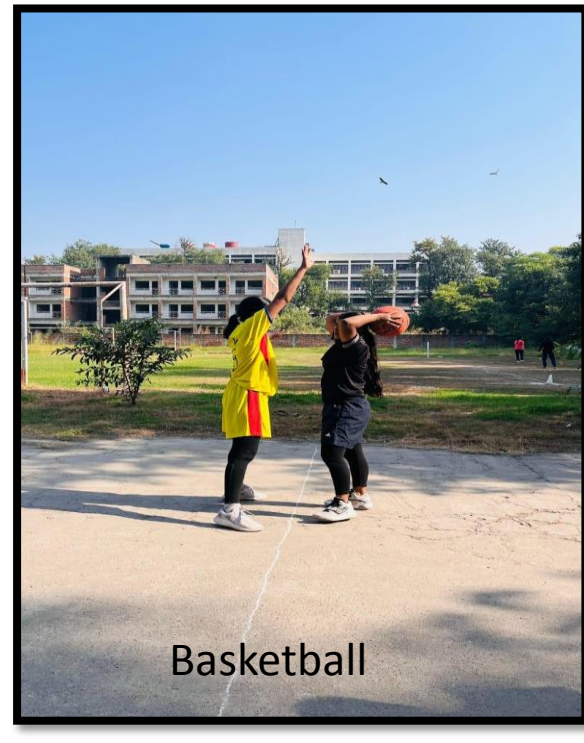
Basketball

SHWETA
All India Inter University Participation in Handball

SHANIYA
All India Inter University Participation in Kabaddi

KAJAL
All India Inter University Participation in Judo and Boxing

HIMANSHI
All India Inter University participation in Cricket, 2nd position in district kabaddi (junior)
3rd position in district kabaddi(senior)

RASHI
All India Inter University Participation in Boxing, Bronze in Delhi state boxing

PARUL
2nd in district kabaddi (junior), 3rd position in district kabaddi(senior), 1st position in Delhi state kabaddi

NISHITA

2nd position in district kabaddi (junior)

POOJA

3rd position in inter college boxing

PRASHANSA AGARWAL
3rd position in inter college taekwondo

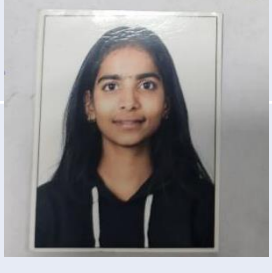

SAKSHI
2nd position in district kabaddi

SAKSHI
3rd position in inter college Judo

ARSHIYA NEGI
3rd position in district kabaddi(senior)

DEPARTMENT OF ZOOLOGY

Organized a work shop on Heart health awareness and CPR training workshop in association with Sir Ganga ram Hospital New Delhi on 5 November 2024 at seminar Room.

हार्टअटैक के मामले में बढ़ोतरी के लिए अनहेल्दी खानपान जिम्मेदार

कालिंदी गर्ल्स कॉलेज में हार्ट जागरूकता शिविर व सीपीआर ट्रेनिंग कार्यक्रम आयोजित

(विशेष संवाददाता)

नई दिल्ली 6 नवम्बर। ओम हेल्प फाउंडेशन के सौजन्य से कालिंदी कॉलेज ईस्ट पटेल नगर में आज एक दिवसीय हार्ट जागरूकता शिविर व सीपीआर ट्रेनिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया इस शिविर में सर गंगाराम हॉस्पिटल की वरिष्ठ हार्ट रोग विषयज्ञ डॉक्टर कविता ने सभी छात्राओं के बीच हृदय रोगों से संबंधित जानकारी दी और इनसे कैसे बचा जाए प्रोजेक्टर के माध्यम से अपनी बात रखी डॉक्टर कविता त्यागी ने कहा स्वस्थ जीवन के लिए स्वस्थ हृदय होना बेहद जरूरी है। इस अवसर पर डॉ कविता त्यागी ने कॉलेज छात्रों को हार्ट अटैक की आपात स्थिति सीपीआर देने की तकनीक के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान दी और सीपीआर ट्रेनर सनी साहनी ने डेमो के माध्यम से सीपीआर कैसे देनी कब देनी बारे समझाया इस अवसर पर डॉ कविता त्यागी कहा कि आजकल हार्टअटैक के मामले तेजी से बढ़ रहे है छोटी उम्र के युवा भी अब इसका शिकार होना शुरू हो गए हैं इसके पीछे अनहेल्दी खानपान, तनाव,नशीले पदार्थो का सेवन व शारीरिक श्रम की कमी जिमेदार है। उन्होंने कहा कि महिलाओं को सांस फूलना, अचानक कमजोरी थकान महसूस करना आदि लक्षण बिना चेस्ट पेन के भी हो सकते हैं, इसलिए नियमित रूप से अपने बीपी व ब्लड शूगर की जांच कराते रहें। इस अवसर पर महाविद्यालय के स्टाफ मैम्बर्स व छात्राओं का स्वास्थ्य जांच भी की गई तथा जरूरतमंद मरीजों का ईसीजी टेस्ट भी किया गया।

इस अवसर महाविद्यालय की प्रिंसिपल प्रोफेसर मीणा चारंदा ने डॉ कविता त्यागी का बहुमूल्य जानकारी के लिए धन्यवाद किया इस शिविर में जूलॉजी विभाग के डॉक्टर वर्षा सिंह, डॉ सौरभ कुमार झा,डॉ प्रियंका, डॉ रोजिना, गुलशन कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

ECA-CLUBS

Nupur Indian Group Dance Club:

Paint & Brush: A Poster Making Competition on the theme 'Anti-Ragging

Team aaghaaz won 2nd position in SYMBIOSIS,NOIDA

Rangoli Cultural Club: Participants making rangoli in the rangoli event

Lamp-lighting and Inaugural of ECA Cultural Program on 19/2/25

Aaghazclub

Of Muses and Bards team with ECA committee

DEVELOPMENT'S ACTIVITIES

एक दिवसीय शैक्षणिक कार्यशाला मुख्य वक्ता आदरणीय पी.सी.टंडन व प्राचार्या प्रोफेसर मीना चरंदा

एक दिवसीय गैर शैक्षणिक कार्यशाला

Spic macay

Student Union

Garden Committee
Plantation drive organized 30 September 2024 in collaboration with Hindi Department

LEHREN 25 DAY -1

CHIEF GUEST SHRI RAVINDER INDRAJ SINGH(MINISTER OF SOCIAL WELFARE,SC ST,GOVT.OF DELHI)

DAY-2

DAY-2 CHIEF GUEST SHRI LAL SINGH ARYA(NATIONAL PRESIDENT ,SC MORCHA ,BJP)

LEHREN DAY -2 4TH APRIL 2025

GUEST OF HONOUR SHRI GURU PRAKSH PASWAN (NATIONAL SPOKES PERSON BJP)

DAY 2- 4 APRIL 2025

CHIEF GUEST SHRI. CHIRAG PASWAN

LEHREN-25 DAY-2

CHAIR PERSON GOVERNING BODY KALINDI COLLEGE PROFE. MANJU KAMBLE : PROF. MEENA CHARANDA PRINCIPAL

Lehren Competition's

KALINDI COLLEGE
STUDENTS' UNION
LEHREN'2025
3RD & 4TH APRIL, 2025
युवा संस्कृति : THE YOUNG INDIA FESTIVAL

KALINDI COLLEGE
LEHREN'2025
3RD & 4TH APRIL, 2025

Kalindi College DU
Department of Physical Education
Sports Achievers 2024-25

SWETA
All India Inter University
Participation
in Kho-Kho

RIYA
All India Inter University
Participation in Boxing

ANJITHA
All India Inter University
Participation in Chess

MEGHA
Silver medal in 100,200 m race in Inter College athletic tournament

SAKSHI
2nd position in 21 km race in Inter College athletic tournament,
4th position in 5 km race in Inter College athletic tournament

SHALINI MAURYA
2nd position in 10 km race in Inter College athletic tournament

कालिंदी महाविद्यालय
(राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा A+ श्रेणी प्राप्त)
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
पूर्वी पटेल नगर, नयी दिल्ली - 110008